जागरण के स्वर

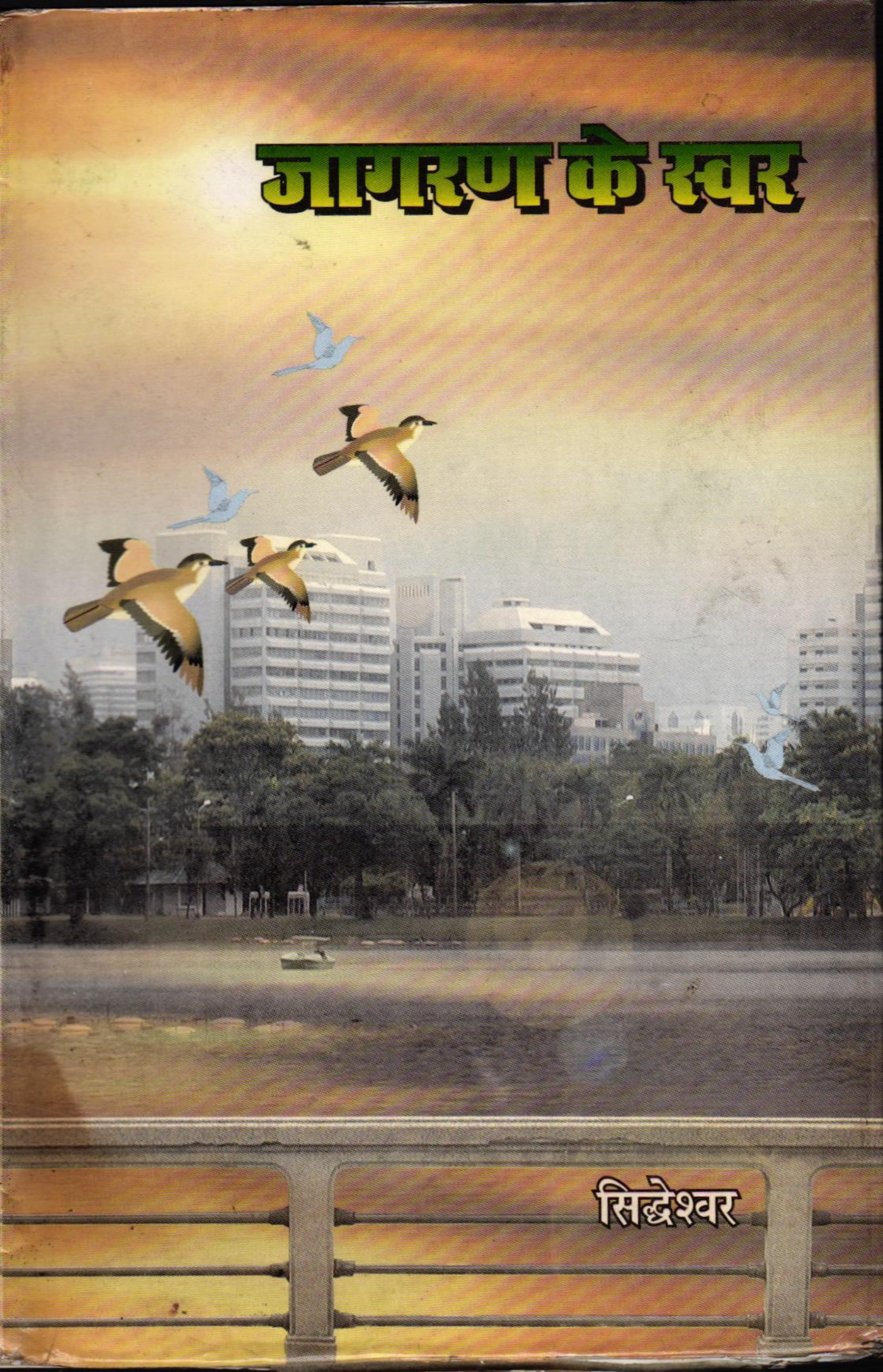

सिद्धेश्वर

जागरण के स्वर

सिद्धेश्वर

सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

जागरण के स्वर

(सेन्र्यू काव्य संग्रह)

सिद्धेश्वर

सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन

दिल्ली

समर्पण

उन सभी मनीषियों और महापुरुषों को, जिनकी विचारधाराएँ
व्यक्ति को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करती हैं,विवेक
का प्रकाश फैलाती हैं और वही आत्मचिंतन एवं
विवेक व्यक्ति को जीवन की वास्तविकता का
बोध कराता है, क्योंकि जिंदगी महज एक
सपना नहीं, महज चाँदनी–सी शीतलता
नहीं, जो कभी धूल से अटी, कभी
ओस से पटी कच्ची–पक्की सड़क
से गुजरती, गिरती और संभलती है,
बल्कि वह भूख से बिलबिलाते
बच्चे का पेट भी है और ईंट
भट्ठों पे कड़कड़ाती गर्मी
में ईंटें ढोते मजदूरों
का पसीना
भी।

सिद्धेश्वर

जागरण के स्वर

(सेन्र्यू काव्य संग्रह)

कृतिकार	:	सिद्धेश्वर
प्रकाशक	:	सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन, 'दृष्टि', यू. 207,शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली–110 092.
दूरभाष	:	011–22059410, 22530652
©	:	सिद्धेश्वर
E-mail	:	sidheshwarprasad@hotmail.com
प्रथम संस्करण	:	वर्ष 2004 ई.
शब्द–संयोजन	:	सोलूसंस प्वायंट, 'दृष्टि', यू. 207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली–110092.
मुद्रक	:	बुकमैन प्रिन्टर्स, दिल्ली–110092 फोन : 30945590, 55257458
वितरक	:	सुधीर रंजन 'दृष्टि', यू. 207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली–110092.
दूरभाष	:	011–22059410, 22530652
मोबाइल	:	9811281443, 9899238703
फैक्स	:	011–22530652
मूल्य	:	125 रुपए

Jagran Ke Swar : Sanryu poems by Sidheshwar
Price Rs 125.00

संग्रह के संदर्भ में

वर्ष 1998 ई. में प्रकाशित 'पतझर की सांझ' मेरा प्रथम हाइकु काव्य संग्रह था। फिर जापानी विधा हाइकु के ही दूसरे रूप सेन्र्यू में 'सुर नहीं सुरीले' काव्य संकलन वर्ष 2004 में आया और इसी वर्ष तीसरे पड़ाव पर है आपके हाथ 'जागरण के स्वर' सेन्र्यू काव्य संग्रह।

कब कहाँ और कैसे मिली मुझे प्रेरणा 'जागरण के स्वर' में मनुष्य और उसकी कमजोरियों पर उभरी अपनी अनुभूतियों को शब्दों में बाँधने की इसे स्पष्ट करना मेरे लिए यहाँ लाजिमी है। यों तो मेरी पीढ़ी तक मेरे परिवार के सभी सदस्य शुद्ध रूप से शाकाहारी रहे हैं और अहिंसा में सभी का विश्वास रहा है फिर भी भगवान महावीर व महात्मा गाँधी के बताए रास्ते अहिंसा पर अपने भाव व्यक्त करने का नशा मुझ पर तब चढ़ा जब 16 एवं 17 नवंबर 2002 को नई दिल्ली में राष्ट्रीय विचार मंच द्वारा वैचारिक क्रांति को केंद्र में रखकर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन के सिलसिले में डॉ. धर्मेंद्र नाथ अमन के सौजन्य से मैं मुनिश्री लोकप्रकाश 'लोकेश' के सान्निध्य में आया और अहिंसा के बारे में मुझे कुछ और अधिक जानने का अवसर मिला। सच मानिए अहिंसा यात्रा के प्रवर्तक आचार्यश्री महाप्रज्ञ के विद्वान शिष्य मुनिश्री 'लोकेश' जी की विलक्षण क्षमता और वक्तृत्व कला का जैसे मुझ पर जादू चढ़ गया। उनके आचरण, वेश–भूषा, सादगी और देश की वर्तमान समस्याओं पर उनके विचारों से मैं दिन–ब–दिन रू–ब–रू होता रहा। इस बीच राष्ट्रीय विचार मंच और राष्ट्रीय चेतना के वैचारिक उसके मुख–पत्र 'विचार दृष्टि' के उद्देश्यों को भी मैंने अणुव्रत आंदोलन के अनुरूप पाया। मुनिश्री 'लोकेश' जी तथा अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष प्रो. धर्मेंद्रनाथ अमन के आमंत्रण पर अणुव्रत आंदोलन के कई कंठ से 'संयममय जीवन हो..... अथवा 'सुनो, सुनो ये कहानी भगवान की.......' गीतों को सुमधुर स्वर में सुनकर मैं काफी अभिभूत हुआ। मुझे प्रसन्नता यह देख–सुनकर हुई कि जिस उद्देश्य को लेकर मंच तथा पत्रिका के हम सभी सदस्य सक्रिय हैं उसे अणुव्रत महासमिति और अणुव्रत न्यास द्वारा भी मूर्त रूप दिया जा रहा है।

इस प्रकार मैंने देखा कि दोनों का लक्ष्य एक–वैचारिक क्रांति का अलख जगाना। दोनों का मानना है कि वैचारिक क्रांति के बिना आचार क्रांति संभव नहीं। फिर चल पड़े उसी रास्ते, जिस पर चलकर देश व समाज की मौजूदा समस्याओं का समाधान सामने दिख रहा हो। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि आचार्यश्री तुलसी के द्वारा जीवन में मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए प्रतिपादित अणुव्रत आंदोलन को जन–जन तक पहुँचाने के लिए आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा वर्ष 2001–2006 की अवधि में अहिंसा यात्रा जारी है, जो मात्र एक पद–परिक्रमा ही नहीं, बल्कि राष्ट्र की समस्याओं को समझने–समझाने का भी क्रम है। यह जन–जन की चेतना का एक प्रयास है। देश की संवेदनाओं को जगाने का अभियान है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ का यह अभिक्रम निरंतर

गतिमान है। मुझे इस बात की खुशी है कि उनकी इस अहिंसा यात्रा के दौरान सूरत में आयोजित चातुर्मास के सम्मेलन में अणुव्रत महासमिति के आमंत्रण पर मुझे भी हिस्सा लेने का अवसर मिला जिसमें 'अहिंसक समाज की संरचना में लेखकों की भूमिका' विषय पर हुई संगोष्ठी की अध्यक्षता करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुझे लगा कि अहिंसा यात्रा की इस पावन अवधि में ही महावीर के दर्शन और अहिंसा के संबंध में उमड़ रहे अपने भावों को सेन्र्यू छंदों में बाँध उसे एक काव्य–संग्रह में संजोऊँ ताकि अणुव्रत आंदोलन का मैं भी एक हिस्सा बन सकूँ। इसी का परिणाम है यह संग्रह 'जागरण के स्वर'।

भारत सहित पूरे विश्व में तनाव, आतंक, हिंसा एवं बर्बादी के चलते हो रही तबाही से पूरी मानव जाति को बचाने का आज एक ही रास्ता है कि हम लौट चलें अहिंसा की ओर। इसके लिए भगवान महावीर और महात्मा गाँधी के बताए रास्ते पर चलकर एक ओर जहाँ संयममय जीवन जीना होगा वहीं दूसरी ओर असत्य पर विजय पाने के लिए संघर्ष भी करना होगा, क्योंकि अंधकार के विरुद्ध संघर्ष भी जरूरी है। जाति, वर्ण, भाषा, क्षेत्रीयता और धर्म का भेदभाव न रखते हुए मनुष्य को भी सदाचार की ओर आकृष्ट कर बचाया जा सकता है। इसी प्रकार का प्रयास अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से आचार्यश्री तुलसी ने किया और आचार्यश्री महाप्रज्ञ अहिंसा यात्रा द्वारा जन–जन में यही संदेश पहुँचा रहे हैं। आज की भयावह परिस्थिति में नैतिक मूल्यों का विकास और अहिंसक चेतना का जागरण जरूरी है। वैसे भी देशवासियों के समक्ष सदा से त्याग, संयम और संघर्ष का आदर्श रहा है। देश की आजादी भी तो हमने इसी के बल पर हासिल की। इसलिए मनुष्य के भीतर जो हिंसा और असत्य भाव है उसकी सफाई करनी होगी, अहिंसा के प्रति गहरी आस्था जगानी होगी क्योंकि हिंसा स्वयं तो एक समस्या है ही, साथ ही अनेक समस्याओं की जननी भी है। बापू ने कानून और कलम से काम करके अहिंसक जीवन शैली का प्रयोग किया और सत्याग्रह के बल पर जनता में राष्ट्र चेतना की भावना जगाई। उनके पूर्व भगवान महावीर ने हिंसा के बीजों को जागृत करने का संदेश दिया। इस क्रम में उन्होंने इच्छाओं का संयम, पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं के मूल में बैठे संयम का सहिष्णुता, उदारता, सहृदयता और त्याग–भावना को आधार माना। बल्कि सच तो यह है कि उनका व्यावहारिक जीवन समभाव और विषमता को दूर कर समता के भाव को प्रश्रय देता है। इसलिए उनका संदेश हर इंसान, हर जमाने के लिए है। भगवान महावीर के इन्हीं भावों से प्रेरित होकर इस 'जागरण के स्वर' में 'महावीर' एवं 'अहिंसा' शीर्षकांतर्गत उनके संदेशों को संजोया गया है।

आजादी के बाद देश के समुचित संचालन के लिए जब हमने लोकतांत्रिक संसदीय प्रणाली अपनाई तो लोकतंत्र हमारी राजनीतिक व्यवस्था का मूल आधार हुआ। प्रारंभ में तकरीबन तीन दशक तक तो सब कुछ ठीक–ठाक चला, पर उसके बाद त्रासदी पर त्रासदी आती गई। वास्तव में इस त्रासदी के मूल में हमारे मूल्यों और चारित्रिक दृढ़ता का ह्रास ही सर्वोपरि है। आज जनता में नेताओं की निष्ठा और

ईमानदारी के प्रति तरह–तरह की आशंकाएँ उठ रही हैं। जनता के प्रति उदासीनता दिखाना संसदीय प्रणाली के लिए घातक है। देश की राजनीतिक व्यवस्था अपनी वास्तविकता से विचलित है। इसकी खामियों को अपनी खुली आँखों से जन सामान्य आज देख रहा है। खेतों–खलिहानों की खुली हवा में सांस लेनेवाले और सरहदों पर खून बहानेवाले जवानों सहित अन्य देश–वासियों को यह आभास है कि उन्हें अपनी रक्षा के लिए स्वतंत्रता की एक और लड़ाई लड़नी होगी। मैंने इन देशवासियों की डबडबाई आँखों को देखने और समझने का प्रयास किया है और सेन्र्यू की पंक्तियों में अभिव्यक्त किया है। कारण कि आज के राजनीतिक एवं सामाजिक परिवेश से कोई भी सहृदय साहित्यकार सर्वथा तटस्थ होकर घटनाओं का मूकदर्शक बना नहीं रह सकता और नहीं तो अपनी कलम को तो तलवार बना ही सकता है। कलम के द्वारा जन–चेतना जागृत करने के लिए आज वैचारिक पहल जरूरी दिखता है।

इस बीच अमेरिका और ब्रिटेन की गठबंधन सेना ने इराक पर हमला कर दिया। आरोप यह लगाया गया कि इराक के राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन अपने यहाँ जैविक व रासायनिक हथियार जमा कर रखे हैं। अमेरिका ने दुनिया को यह आश्वस्त करने की कोशिश की कि वह केवल सद्दाम की तानाशाही से इराक की जनता को मुक्त कराकर वहाँ लोकतंत्र बहाल करना चाहता है। पर सच तो यह है कि एक ओर जहाँ वह इराक के अकूत तेल भण्डार पर कब्जा करना चाहता था तो दूसरी ओर दादागिरी की धौंस दिखाकर अपनी विस्तारवादी नीति को अमलीजामा पहनाना चाहता था और उसकी प्राथमिकता फिलहाल एशिया की उभरती हुई ताकतों को वश में करना था। जो हो, बुरे इरादों से लैस जॉर्ज बुश और टॉनी ब्लेयर ने इराक पर हमला कर उसे बुरी तरह नेस्तनाबूद करने का प्रयास किया और आश्चर्य तो यह है कि पूरी दुनिया देखती रह गयी। गठबंधन सेना इराक में फैली अराजकता और लूटपाट की घटनाओं का मूकदर्शक बनी रही। उल्लेख्य है कि इराक में न तो घातक रासायनिक और जैविक हथियारों का पता चल सका और न ही लोकतंत्र की बहाली हो पाई। हाँ, हजारों साल की अत्यंत प्राचीन सभ्यता का विनाश जरूर हुआ और हजारों की संख्या में निर्दोष और निहत्थे इराकी नागरिकों की जाने गईं। इसमें दो राय नहीं कि सद्दाम हुसैन एक क्रूर किस्म के तानाशाह थे, लेकिन क्या किसी तानाशाह को सत्ता से हटाने का एक मात्र तरीका उसके देश पर हमला बोलना ही होता है ? यदि हाँ, तो पाक के तानाशाह राष्ट्रपति परवेज मुर्शरफ की बारी कब आएगी ? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका जवाब भारत को अमेरिका से पूछना चाहिए। इराक युद्ध की इन सारी घटनाओं को संग्रह के 'खाड़ी युद्ध' और 'आतंकवाद' शीर्षक की सेन्र्यू पंक्तियों में मैंने अपने शब्दों में बाँधने की चेष्टा की है ताकि अमेरिका विरोधी भावनाओं का बेहतर प्रतिनिधित्व हो सके।

एक बात और मैं अपने पाठकों को बता देना चाहता हूँ कि मैंने अपने पिछले सेन्र्यू काव्य संग्रह 'सुर नहीं सुरीले' में भी मानव जीवन की विद्रूपताओं को प्रमुखता दी है और व्यंग्यात्मक शैली में मनुष्य की कुरूप यथार्थताओं एवं कमजोरियों को प्रस्तुत किया है। हालांकि हाइकु के सशक्त हस्ताक्षर डॉ. भगवतशरण अग्रवाल ने इसके पूर्व

के मेरे सेन्र्यू काव्य–संग्रह 'सुर नहीं सुरीले' की अपनी भूमिका में स्पष्ट संकेत दे रखा है कि 'हाइकु' और सेन्र्यू' के बीच पूर्णरूप से अभी विभाजन रेखा नहीं खींची जा सकती। पर पता नहीं क्यों, प्रकृति के चित्रण से अलग मानव जीवन की कमजोरियों पर चित्रित कविताओं को सेन्र्यू की कोटि में रखने से मुझे आज भी कोई गुरेज नहीं। यही कारण है कि चिंतन सहित मानव की पीड़ा और संवेदना से भरपूर इस संग्रह को भी मैंने सेन्र्यू काव्य–संग्रह कहा है। हाँ, डॉ. भगवतशरण अग्रवाल के संपादकत्व में अहमदाबाद से प्रकाशित हाइकु त्रैमासिकी 'हाइकु भारती' में प्रस्तुत डॉ. सुधा गुप्ता के नवीनतम हाइकु संग्रह 'धूप से गपशप' की समीक्षा में डॉ. शैल रस्तोगी के इस विचार से मैं पूर्णतः सहमत हूँ कि मात्र हाइकु छंद की शर्तें पूरा करने से ही हाइकु कविताएँ उत्कृष्ट नहीं होती और न कोरी वर्णनात्मकता काव्य की परिधि में आती हैं। अगर वह आती है तो कविता कहीं न कहीं से आहत अवश्य होती है। इस दृष्टि से 'जागरण के स्वर' की सेन्र्यू रचनाओं में उससे भरसक बचने का प्रयास किया गया है, किंतु हम कितना बच पाए हैं, यह तो समीक्षक ही बता सकते हैं।

मैंने हाइकु एवं सेन्र्यू कविताओं के माध्यम से जीवन को अनेक रूपों में जीया है। प्राकृतिक छटाओं से लेकर खण्डित होते सामाजिक मूल्य–मर्यादाओं और मानदण्डों की विद्रूपता एवं आतंकवाद के साए में पनपती विसंगतियों को सेन्र्यू की इन पंक्तियों के माध्यम से चित्रित करने की मैंने कोशिश की है पर मुझे नहीं मालूम कि संवदेनहीनता के इस दौर में हमारी इन रचनाओं के मूल मर्म को लोग कितना पहचान पाएँगे। पर इतना अवश्य है कि कविता के अभीष्ट के हिसाब से आज के टूटते–बिखरते समाज, लुप्त होती संवेदनाओं की दुनिया और तरह–तरह से शून्य होती भावनाओं में प्राण चेतना भरने का प्रयास नितांत प्रासंगिक है।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि इधर हाल के वर्षों में लघु कथा, क्षणिका जैसी लघुविधाओं के साथ–साथ हाइकु अथवा सेन्र्यू कविताओं की पठनीयता बढ़ी है, और उसका कारण है महानगरीय जीवन में समय का अभाव। फलतः इधर पाँच–सात–पाँच के क्रम में सत्रह वर्णीय त्रीपदी हाइकु छंद रचनाकारों और पाठकों की संख्या में आशातीत वृद्धि हुई है। यही नहीं देश की विभिन्न भाषाओं में लगभग एक सौ पत्र–पत्रिकाएँ भी हाइकु कविताओं को प्रश्रय दे रही हैं। साथ ही प्रत्येक वर्ष कई हाइकु संग्रह भी प्रकाशित हो रहे हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि आज के तनावपूर्ण और भाग–दौड़ वाले परिवेश में हाइकु जैसी लघु कविताएँ भी लोगों के मन–मस्तिष्क पर अपना प्रभाव छोड़ रही हैं। जबकि हाइकुकार गोविंद सेन के मतानुसार हाइकु लिखना शब्दों की चिमटी में क्षण की अनुभूति को पकड़ने जैसा ही है। सत्रह अक्षरों के जाल में क्षणों को फंसा लेना आसान नहीं है। जापान के प्रसिद्ध हाइकुकार यशुदा ने तो इसे एक श्वासी काव्य (One breath poem) कहा है। जहाँ तक सेन्र्यू कविताओं का सवाल है, मेरा मानना है कि सेन्र्यू में मनुष्य और सामाजिक जीवन का शायद ही अब कोई भी पक्ष उपेक्षित मिलेगा। दरअसल लघु आकार की सेन्र्यू या हाइकु कविताओं में जो कुछ कहा जाता है, 'वह तो संकेत मात्र है। जो

मूल कथ्य है, वह पाठकों की कल्पना पर छोड़ दिया जाता है। इस नई विधा में काव्य के प्रतिमानों ने मानवीय चेतना के सामने एक सवाल खड़ा कर दिया है। उसके शाश्वत स्वरूप को प्रज्ज्वलित करना हमारा दायित्व है। 'जागरण के स्वर' अहिंसा की ओर लोगों को प्रोत्साहित करने का सर्जनात्मक प्रयास है जो आज आपके हाथों में है। फैसला आपको करना है कि मेरी अनुभूतियाँ आप तक पहुँचकर किस हद तक आपको आंदोलित कर सकीं। यदि मेरी अनुभूतियों के स्वर आपके स्वर बन सके और पाठकों को सामाजिक संवेदना से जोड़ सके तो मैं अपने इस प्रयास को सार्थक समझूँगा।

जैसा कि मैंने पूर्व में कहा कि जापानी विधा के इस सेन्र्यू काव्य संकलन में महावीर के दर्शन और अहिंसा पर काव्य सृजन क्षमता को जगाने की प्रेरणा मुझे अहिंसा--यात्रा के राष्ट्रीय प्रवक्ता कवि मुनिश्री लोक प्रकाश 'लोकेश' के सान्निध्य से मिली। यही नहीं अपितु मेरे आग्रह पर उन्होंने अपनी शुभाशंसा लिखकर इस संकलन की गरिमा को बढ़ाया है, मैं उनके प्रति उनकी हार्दिकता के लिए हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी उनका मार्गदर्शन हमें मिलता रहेगा।

प्रस्तुत काव्य यात्रा में राजधानी कॉलेज, नई दिल्ली के पूर्व प्राध्यापक एवं अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) धर्मेंद्र नाथ अमन ने बड़ी आत्मीयता से इस संग्रह के संवर्द्धन में सहयोग कर अपने अभिमत दिए हैं, मैं कृतज्ञ हूँ उनका।

'जागरण के स्वर' को भाषा–शिल्प एवं कथ्य की दृष्टि से परिमार्जित कर उसपर अपना अभिमत प्रदान करने में भाषा के मर्मज्ञ और काव्य विधा के सशक्त हस्ताक्षर डॉ. देवेन्द्र आर्य का अपेक्षित सहयोग न मिला होता तो शायद मेरी अनुभूतियाँ इतने अच्छे ढंग से प्रस्तुत न हो पातीं। डॉ. आर्य ने इस संकलन की भूमिका भी लिखी है जिसके लिए मैं उनके प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ।

समय–समय पर डॉ. अनिल दत्त मिश्र, अरुण कुमार भगत, संजय सौम्य, सुधीर रंजन आदि शुभेच्छुओं ने मेरे स्वर को गति प्रदान करने में अच्छी भूमिका अदा की जिसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। कंप्यूटर पर अक्षर–संयोजन में बेटी अंजलि, अनुज कुमार तथा दीपक कुमार ने काफी परिश्रम कर इसे पूरा किया। साधुवाद।

22 फरवरी, 2004 –सिद्धेश्वर

'दृष्टि', यू–207, शकरपुर,
विकास मार्ग, दिल्ली–110 092.
दूरभाष : 011–22059410, 22530652

भूमिका

बेबस जिंदगी के काव्य का परिधान पहनाती कविताएँ

जापानी विधा के इस 'सेन्‌र्‌यू काव्य की मूल चेतना भगवान महावीर के अहिंसा दर्शन पर आधारित है। कविवर सिद्धेश्वर नाम के अनुरूप सिद्धहस्त कवि हैं। जीवन को बहुत करीब से देखनंवाले इस कवि ने 'समर्पण' में ही अपने कवित्व के उदात्त स्वरूप के दर्शन करा दिए हैं। वह कहता है, 'जिंदगी महज एक सपना नहीं, महज चाँदनी सी शीतलता नहीं जो कभी ध ूल से अटी, कभी ओस से पटी कच्ची–पक्की सड़क से गुजरती, गिरती और संभलती है, बल्कि वह भूख से बिलबिलाते बच्चे का पेट भी है और ईंट भट्टों पे कड़कड़ाती गर्मी में ईंटे ढोते मजदूरों का पसीना भी है।' समर्पण के ये शब्द अपने आप में महाकाव्य की आत्मा को समेटे हुए हैं जो चाँदनी की शीतलता के साथ–साथ भूख से बिलबिलाते बच्चे के पेट और मजदूर के पसीने की वकालत करता है। महलों के सुखों में तो ज़िंदगी कोई भी जी लेगा पर गरीबी और भूख की मार में जीवन जीना कोई खेल नहीं है। कवि सिद्धेश्वर ने इसी बेबस ज़िंदगी के काव्य का परिधान पहनाया है।

वैसे तो प्रत्येक रचना का अपना एक विशेष उद्देश्य होता है, सो इस रचना का भी है। इस रचना को कवि ने विशेष रूप से महावीर की अहिंसा से सजाया है। इस संग्रह में दस शीर्षक हैं। 'महावीर' और 'अहिंसा' शीर्षक के अंतर्गत जितने भी हाइकू (सेन्‌र्‌यू) छंद हैं, उनमें महावीर के उपदेश हैं, 'अहिंसा' का वैचारिक दर्शन है, सिद्धांत कथा। सिद्धांत कथन की रूक्षता को कवि ने काव्य की चाशनी में लपेटकर स्वीकार करने योग्य बना दिया है। वह कहता है–

अनुशासन
निज पर ही
शासन कर

अपरिग्रह
वह नहीं जिसे न
हो धन–धान्य

परिग्रह तो होगा
आग्रह से रहित
दृष्टिकोण है

मूल्य न होता
जब तक दर्शन
जीया न जाता

मौन रहे वे
अहिंसा को रमने
हेतु आत्मा में

घातक माना
वैचारिक हिंसा को
महावीर ने

गीत–ग़ज़ल की तरह हाइकु में व्यक्त करने की ज्यादा गुंजाइश नहीं होती। यह तो संकेत मात्र है, अनुभूति का हल्का–सा स्पर्श मात्र है, पूरी भाव–यात्रा पाठक को स्वयं ही करनी पड़ती है। सिद्धेश्वर जी ने भी सिद्धांत कथन में चिमटी से क्षण को पकड़ा है।

'महावीर' और 'अहिंसा' शीर्षक में कवि के हाथ बँधे हुए हैं, वह चाहकर भी ऊँचा उड़ नहीं सकता। महावीर की विशेषताओं और अहिंसा का सिद्धांत कथन आडे आ जाता है। इसीलिए कवि चाहकर भी अपनी ओर से ज्यादा कुछ नहीं कह पाया है, हां, 'आतंकवाद', 'खाड़ी युद्ध' जैसे शीर्षकों में कवि का स्वतंत्र चिंतक–बोध विशेष रूप से उभर कर आया है। अहिंसा और आतंकवाद दो विपरीत किनारों पर हैं। अहिंसा निर्माण करती है आतंक विनाश करता है। 'अहिंसा' में कवि कहता है–

थकने लगे
जब पांव मेरे, तू
छाँव दे देना

निखरने दो
भाव बस मानव
सब एक हैं

पुकार रही
सादा मानवता को
बच्चों की चीखें

लेकिन आतंकवाद 'अहिंसा' की सारी पवित्र, कल्याणमयी भावनाओं को पुर्जे–पुर्जे कर देता है। लाल खून, चाहे जिस किसी का हो, बहता तो है, सारी भावना भराह उठती है, संवेदना चौराहों पर दम तोड़ देती है, चारों ओर जलती आग में मानवता पिघल–पिघल जाती है, नील गगन में खरौंचे उभर आती हैं, नफरत का अजगर सारी शालता को निगल जाता है। बेवास हवा चिता की राख को मुटि्ठयों में चुप बंद कर लेती है। कवि कहता है–

घर हमारे
आखिर जले, घर
चिराग से ही

आतंकवादी
पूरी मानवता पे
हावी है आज

इस बिफरते आतंकवाद को क्या यूं ही खुला छोड़ देना चाहिए ? कवि आक्रामक मुद्रा में खड़ा है, वह पुरजोर आवाज में कहता है–

आतंकवाद
को समाप्त करना
अपरिहार्य

करना होगा
आतंकवाद पर प्रहार
कड़ा प्रहार

हिंसा रोकने
में कठोर कदमों
की जरूरत

कवि के विरोध का स्वर प्रखर है। आज भारत ही नहीं, एक प्रकार से सारा विश्व ही आतंकवाद की गिरफ्त में है। विश्व जनमत से ही इस समस्या से निपटा जा सकता है। देखा जाए तो खाड़ी युद्ध भी आतंकवाद का दूसरा घिनौना रूप है। एक शक्तिशाली राष्ट्र डंडे के बल पर दूसरों को अपने आधार पर चलाना चाहता है। अमेरिका और ब्रिटेन जैविक और रासायनिक हथियारों का बहाना बनाकर इराक पर भूखे भेड़ियों की तरह टूट पड़ते हैं, वस्तुतः उनकी दोष नजर तो इराक के अकूत तेल भंडारों पर थी।

हजारों–हजारों निरपराध नागरिक मारे गए पर आश्चर्य कि पूरा विश्व चुपचाप देखता रहा, गठबंधन सेना इराक में फैली अराजकता और लूटपाट घटनाओं की मूकदर्शक बनी रही। खाड़ी युद्ध पूरी मानवता के सामने एक विराट प्रश्न चिह्न बनाकर खड़ा है। कवि ने इस पूरे प्रसंग पर अपनी तीखी प्रतिक्रिया जाहिर की है, उसकी आत्मा विकल है, वह कहता है–

विश्व के सभी	धूल में मिली	बगदाद के
राष्ट्र मूक दर्शक	आदिम की धरती	बेगुनाहों की चीखों
खाड़ी युद्ध में	खाडी युद्ध में	में दर्द भी था

कविवर सिद्धेश्वर की यह कृति अनेक विषयों को समेट कर चलनेवाला एनसाइक्लोपीडिया है। एक बात जरूरी है–कवि ने जिस किसी भी विषय को उठाया है, उसे अपने प्राणों से सींचा है, हृदय का अमृत पिलाकर उसे जवान किया है, अनुभव का हरा–भरा प्रांगण देकर उसे मरजीवा बनाया है। मैं कवि को एक अच्छे संकलन की बधाई तो देता ही हूँ, भविष्यमें अन्यान्य साहित्य रत्नों की आकांक्षा भी करता हूँ।

16 मार्च 2004 **–डॉ. देवेन्द्र आर्य**

वाणी सदन, बी–98, सूर्य नगर,
गाजियाबाद–20101,
दूरभाष : 95120–2622563

अभिमत

धर्म रोशन क़लम जारी

सिद्धेश्वर जी से मेरा परिचय नवम्बर 2002 में हुआ जब वह दिल्ली में राष्ट्रीय विचार मंच के वार्षिक अधिवेशन के आयोजन की तैयारी में व्यस्त थे। उनकी सादगी, कर्मठता और दूसरों को अपना बनाने की कला से मैं प्रभावित हुआ। विचार दृष्टि पत्रिका का संपादन और प्रकाशन वह अकेले दम पर ही कर रहे थे यह जानकर आश्चर्य हुआ। लेकिन उनकी जिस बात ने मेरे मन पर सबसे अधिक प्रभाव डाला वह थी उनकी काव्य प्रतिभा। इतनी भाग–दौड़, झंझटों, बखेड़ों के बावजूद न केवल उनके भीतर का कवि जागृत है अपितु काव्य प्रवाह भी जारी है। सिद्धेश्वर जी भी कमाल के आदमी हैं। मुझे हसरत मोहानी (सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता और स्वतंत्रता सेनानी) की एक उर्दू काव्य पंक्ति याद आती है जो उन्होंने जेल में चक्की पीसते हुए कही थी :

है मश्क़े–सुख़न जारी, चक्की की मशक़त थी।
इक तुर्फ़ा तमाशा है 'हसरत' की तबीयत भी।।

क़लम के धनी सिद्धेश्वर जी के लेख पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते ही हैं पुस्तकें भी छप रही हैं। उनके लेखन का कैनवस बहुत बड़ा है। लेखों में केवल सम–सामयिक मामलों, सामाजिक समस्याओं, साहित्यिक विषयों पर ही सारगर्भित व्याख्या, विवेचन और समीक्षा ही नहीं होती बल्कि रचनात्मक सुझाव भी हो हैं। उनकी लेखन शैली पाठकों के हृदय को झकझोर देती है और नव चेतना का प्रचार–प्रसार करती है। उनके साहित्य में लोकहित को सदैव दृष्टि में रखा गया है मैं इसे ही साहित्यकार की पहचान मानता हूं क्योंकि साहित्य (स+हित) में हित नहीं तो फिर क्या है? इसे सिद्धेश्वर जी अपने लेखों और कविताओं के माध्यम से वैचारिक क्रांति का संदेश दे रहे हैं जो एक सच्चे साहित्यकार का धर्म है।

'जागरण के स्वर' सिद्धेश्वर जी का तृतीय काव्य संग्रह है। उनका प्रथम संग्रह था 'पतझर की सांझ' जिसको पाठकों ने पसंद किया। दूसरा काव्य पुष्प था 'सुर नहीं सुरीले' और अब 'जागरण के स्वर' प्रस्तुत हैं जो कभी बेसुरे नहीं होते क्योंकि यह स्वान्तः सुखाय भी है और बहुजन सुखाय ही नहीं बल्कि सर्वभूत हिते रताः है। प्रथम संग्रह में 'हाइकु' थे तो अन्य दो में 'सेन्र्यू'। हाइकु में प्रकृति वर्णन होता है तो सेन्र्यू में मानव संबंधों पर विचार व्यक्त किये जाते हैं। यह विधा अब हिंदी जगत में लोकप्रिय होती जा रही

है, पाठक अब इसे समझने और पसंद करने लगे हैं तथा अब और अधिक कवि भी इस ओर आकर्षित हो रहे हैं।

जापानी कविता की इस विधा को अपनाए जाने का एक कारण यह भी है कि आज की स्विच बटन सभ्यता में प्रत्येक कार्य को तुरंत करने और उसका परिणाम पाने की होड़ लगी है अर्थात् जीवन की तनावपूर्ण व्यस्तता और भाग दौड़ किसके पास समय है कि लंबी कविताएं पढ़े। तलाश है हर क्षेत्र में शार्टकट की। थोड़े समय में, थोड़े शब्दों में बड़ी बात कहना बहुत कठिन कार्य है इसीलिए हाईकु वास्तव में गागर में सागर भरने का प्रयास है। जापान के सुप्रसिद्ध हाकुकार यशुदा ने इस 'एक खासी काव्य' का नाम दिया है। थोड़े में बहुत कहना कितना कठिन होता है इसका निर्णय स्वयं किसी बात को लिखकर कीजिये। हाइकु 17 अक्षरीय बंद है इसमें तीन पंक्तियाँ (5+7+5) होती हैं जिनमें बात इस तरह कहनी है कि इसमें आकर्षण भी हो और संदेश भी, कलात्मकता भी हो और पढ़नेवाले को आनंद भी मिले और उसके भीतर तक विचार भी पहुंचे तभी हाइकु के प्रयोग को सफल माना जा सकता है।

सिद्धेश्वर जी ने जागरण के स्वर में क्रांति की अलख जगाई हैं महावीर को श्रद्धासुमन अर्पित किये तो अहिंसा, शाकाहार जैसे विषयों पर हाइकु के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किये। लोकतंत्र की वर्तमान दशा और गाँव की बदहाली को दर्शन के लिए अपनी लेखनी का उपयोग किया। उनका उद्देश्य आलोचना नहीं सुधार है। व्यंग्यकार एक कुशल चिकित्सक की भांति समाज के फोड़ों को चीरा लगाकर, ज़ख्मों को कुरेदकर मरहम लगाता है। सिद्धेश्वर जी ने यह कार्य बहुत सलीके के साथ किया है। आतंकवाद और खाड़ी युद्ध में अमरीकी नीति की आलोचना निष्पक्षता के साथ की है लेकिन उसमें भी सृजनात्मकता झलकती है। कवि ने आदमी के अंतर्द्वद्व और बेबसी को बड़ी निपुणता के साथ काव्य रूप दिया है–

हैं असंदिग्ध	अर्थ दिया	महावीर ने
महावीर के स्वर	युग दृष्टाओं ने	ही जड़ को पकड़ा व
सार्वभौमता	सारे शब्दों को	बीधा लक्ष्य को

अहिंसा को जीवन की अंतर्यात्रा, आत्म चेतना की स्वीकृति और मनुष्य की तृप्ति और विस्तार बताते हुए उन्होंने लिखा है–

अहिंसा यात्रा	पुकार रही	अहिंसा सदा
अपने जीवन की	सारी मानवता को	आत्म चेतना की ही
है अंतर्यात्रा	बच्चों की चीखें	स्वीकृति होती

आतंकवाद
से धंधे चौपट
कोष खाली

एक धरती
एक आसमाँ
हम ही दो क्यों

झील थी शांत
कैसे बहने लगी
खून की नदी

अलग ही थी
अमरीका के संयम
की परिभाषा

शवों पर ही
अमरीकी फसल
लहराई है

आदमी जिंदा
मोक्ष के लिए नहीं
रोटी के लिए

यह यथार्थवादी दृष्टिकोण है लेकिन आंशिक या अर्धसत्य है क्योंकि 'Man does not live by bread alone'। मैं भवानी प्रसाद मिश्र जी के विचार से सहमत हूँ।

रोटी और रामायण दोनों।
यही दाहियें कोनों कोनो।।

लेकिन रोटी बुनियादी जरूरत है यह सत्य है। शाकाहार के समर्थक सिद्धेश्वर जी एक प्रश्न पूछते हैं–

जो व्यक्ति पर
हिंसा नहीं करते
उसे हिंसा क्यों

शाकाहार
उत्कृष्ट जीवन की
है एक नीव

गाँव आज भी
जिंदा है, जिंदादिली
मुरझा गई

मैं यह काव्य संग्रह पढ़कर यह दुआ देता हूँ कि सिद्धेश्वर जी का धर्म (कर्त्तव्य निष्ठा) रोशन रहे और कलम जारी रहे और फैलायें आज/जागरण के स्वर/शांति के लिए।

डॉ. धर्मेन्द्रनाथ अमन
अध्यक्ष : अणुव्रत महासमिति

16 मार्च 2004
अणुव्रत भवन,
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110 002
दूरभाष : 2323 3345, 2323 9963

शुभाशंसा

कविताओं में मानवीय विवेक की झलक

कवि सिद्धेश्वर जी समय के कवि हैं। समय के साथ कदम ताल मिलाकर चलनेवाले कवि हैं। प्रतिस्पर्धा व आपाधापी के युग में आदमी हर कार्य को फटाफट करना चाहता है। स्वल्प समय में, छोटे रास्ते से मंजिल प्राप्त करने की पाठक की ललक ने साहित्यिक जगत को भी प्रभावित किया है। हाइकु और सेन्र्यू कविताओं की बढ़ती मांग इसी का प्रमाण है।

सन् 1998 में जापानी विधा हाइकु में "पतझर की सांझ" तथा सन् 2004 में सेन्र्यू विधा में "सुर नहीं सुरीले" काव्य संग्रह के बाद "जागरण के स्वर" कविवर सिद्धेश्वर जी का तीसरा काव्य संग्रह है।

सादा जीवन उच्च विचार के प्रतीक पुरुष सिद्धेश्वर जी एक प्रखर वक्ता, मौलिक लेखक और ओजस्वी कवि हैं। वक्ता के रूप में वे श्रोताओं को अपने साथ बहा ले जाते हैं और अपनी बात गले से उताकर हृदय में बिठाने का सामर्थ्य रखते हैं। लेखक के रूप में जब वे बुराईयों पर कलम चलाते हैं तब कलम को कुदाल ही बना डालते हैं। कवि के रूप में हाइकु और सेन्र्यू विधा में स्वल्प शब्दों के माध्यम से असीम भावों को प्रकट करने का सामर्थ्य पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ के हर पेरे में परिलक्षित हो रहा है।

प्रस्तुत ग्रंथ में 'महावीर' खण्ड के अंतर्गत उनके गूढ़तम तत्व दर्शन को जिस पर पूरा एक–एक ग्रंथ लिखा जा सकता है। सीमित शब्दों में प्रस्तुत करने में कवि ने सफलता पायी है। जैसे–

अपरिग्रह
वह नहीं, जिसे न
हो धन धान्य

महत्व नहीं
महावीर धर्म में
वर्णवाद का

अहिंसा खण्ड के अंतर्गत कविवर सिद्धेश्वर जी समस्याओं के मूल पर प्रहार करते हुए लिखते हैं–

मिटा दो
इंसान की मुस्कान
फिर लौटा दो

हिंसा की जड़
मनुष्य की लालसा
भौतिक–सुख

आतंकवाद से आज केवल भारत ही नहीं समूचा विश्व प्रभावित और भयाक्रान्त है। उसके विविध पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए वह कहते हैं–

आतंकवाद
से धंधे चौपट व
कोष खोखला

एक धरती
एक आसमां फिर
हम ही दो क्यों ?

शाकाहार के बारे में वे लिखते हैं–

क्यों अधिकार
बनाने का भोजन
अन्य प्राणी को

जनतंत्र की खूबियां कुछ यू प्रकट हुई हैं उनकी कलम से–

रक्षा की जाती
विचार स्वातंत्र्य की
जनतंत्र में

होती जनता
शक्ति का उद्गम
जनतंत्र में

कविवर सिद्धेश्वर जी के प्रस्तुत संग्रह में नैतिक चेतना एवं मानवीय विवेक की झलक मिलती है। यह विवेक ही समाज को सत्य पथ की ओर ले जाता है। कवि ने जीवन मूल्यों की केवल पड़ताल ही नहीं की बल्कि उन्हें जीया है। यही कारण है कि उनकी कविताओं में आदर्श और यथार्थ का अनुपम समन्वय देखने को मिलता है। अनुभूति और अभिव्यक्ति की उनमें अपूर्व क्षमता है।

आशा है सेन्र्यू विधा में कवि सिद्धेश्वर जी का यह प्रयत्न गागर में सागर की उक्ति को चरितार्थ करता हुआ प्रतिस्पर्धा व भाग दौड़ के युग में सुधी पाठकों को स्वल्प समय में अधिक वैचारिक खुराक प्रदान करेगा।

मुनिश्री लोकप्रकाश 'लोकेश'

18 मार्च 2004
अणुव्रत भवन,
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110 002
दूरभाष : 2323 3345, 2323 9963

अनुक्रम

संग्रह के संदर्भ में.. (iv)

भूमिका..(ix)

अभिमत..(xii)

शुभाशंसा...(xv)

अनुक्रम...(xvii)

महावीर...18

अहिंसा...35

आतंकवाद..65

खाड़ी युद्ध...73

आदमी..81

शाकाहार...90

गाँव...93

स्त्री..96

जनतंत्र..99

आँसू...110

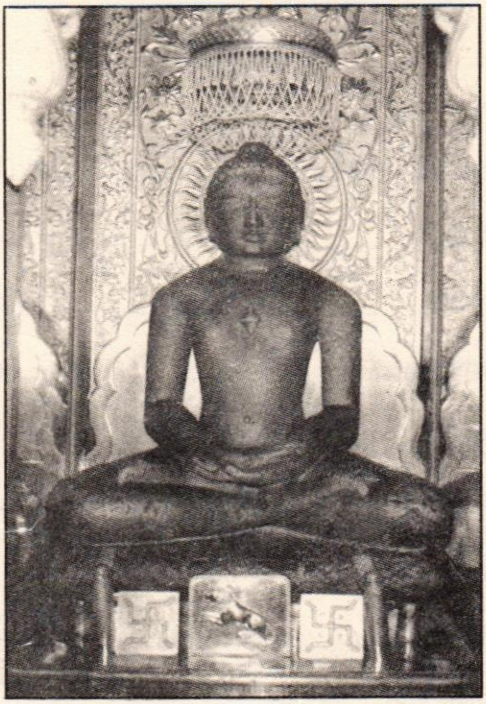

महावीर

महावीर ने
आत्मतुल्य समझा
सभी जीवों को

महावीर

महावीर थे
सामाजिक चेतना
के अग्रदूत

❑

है असंदिग्ध
महावीर के स्वर
सार्वभौमता

❑

गंध भी नहीं
अस्पृश्यता का भी
प्रणयन में

❑

समाज सुखी
आत्मसात किया, जो
नैतिक गुण

❑

प्राणी–मात्र ही
धर्म आचरण था
महावीर का

❑

जगह नहीं
सार्वभौम धर्म में
जातिवाद की

❑

महावीर के
प्रधान शिष्यों में थे
इंद्रभूति जी

❑

महावीर के
धर्म में क्रिया कांडों
का स्थान नहीं

❑

होता हमेशा
तृष्णा से ही अधिक
सुखों का नाश

❑

महावीर थे
मानव के मसीहा
करुणा–भरे

❑

महत्त्व नहीं
महावीर धर्म में
वर्णवाद का

❑

मिथ्या दृष्टि से
लेकर सम्यगट्ट
उनकी दृष्टि

❑

विश्व के लिए
गाह्य हो जैन धर्म
महावीर का

❑

महावीर ने
आत्म तुल्य समझा
सभी जीवों को

❑

उपासना की
उलझन नहीं है
महावीर में

❑

परिग्रह से
वर्ग–भेद बनता
उन्होंने माना

❑

माना उन्होंने
आवश्यक हिंसा भी
हिंसा ही होती

❑

आचरण भी
गौण होता जा रहा
सभी धर्मों में

❑

अपरिग्रह
वह नहीं, जिसे न
हो धन्य–धान्य

❑

महावीर थे
सामाजिक चेतना
के अग्रदूत

❑

अनुशासन
होगा निज पर ही
शासन कर

❑

प्राप्त हो गईं
आत्मिक ऋद्धियां भी
महावीर को

❑

महावीर थे
संस्कृति के प्रतीक
तप प्रधान

❑

महावीर थे
आत्मिक साम्य के ही
उन्नायक भी

❑

अहिंसामय
बनाया जीवन को
महावीर ने

❑

पड़ा प्रभाव
महात्मा गांधी पर
महावीर का

❑

प्रचुरता से
मिले, जिसे तब भी
वह त्यागे ही

❑

महावीर ने
ही पाँच महाव्रतों
की शिक्षा भी दी

❑

महावीर ने
सत्य के आग्रह को
पहला माना

❑

करते सदा
घोर तिरस्कार वे
वर्ण–भेद का

❑

वश में किया
इद्रियों व मन को
तप करके

❑

द्वैतपरक
उनका दार्शनिक
दृष्टिकोण था

❑

परिग्रह तो
आग्रह से रहित
दृष्टिकोण है

❑

अपनाया था
संयम का मार्ग भी
महावीर ने

❑

सजल हुआ
पियूष सरोवर
सद्गुणों का

❑

बल दिया है
जीव–दया पर भी
महावीर ने

❑

महावीर ने
ब्रह्म का अंश कहा
जीव आत्मा को

❑

मान्य नहीं था
उन्हें शरीर–भेद
से आत्म भेद

❑

वस्तु स्वामित्व
न वस्तु का संग्रह
है परिग्रह

❑

चूर हो गए
एकता के तार ही
पूरे विश्व में

❑

महावीर का
हिंसा के विरोध में
शस्त्र न उठा

❑

बनाना होगा
अपनी चेतना को
प्रशिक्षक भी

❑

महान होता
त्यागी, जो वह मिले
स्वाधीन वृत्ति

❑

इसीलिए तो
जीव आत्मा मात्र में
एकता मति

❑

न संप्रदाय
सांप्रदायिकता ही
परिग्रह है

❑

अर्थ दिया है
युग द्रष्टाओं ने ही
सारे शब्दों को

❑

वह जीवन,
क्या है, जो दुखियों का
दुःख न हरे

❑

महावीर ने
मन, वचन, कर्म
पे बल दिया

❑

रुचि नहीं भी
अपने वैभव में
महावीर को

❑

मूल्य न होता
जब तक दर्शन
जीया न जाता

❑

जरूरी होता
आर्थिक संयम व
इच्छा संयम

❑

है बड़ी बात
मानना व जानना
महावीर को

❑

महावीर की
साधना में औरतें
बाधक नहीं

❑

महावीर का
खुद शरीर पर
भी नियंत्रण

❑

तीर्थंकर ने
लोक चेतना को भी
नई दिशा दी

❑

अकेले रहे
महावीर अपने
साधना–काल

❑

तीर्थंकर के
मन की डोर सदा
रही हाथ में

❑

बारह वर्षों
में तीन सौ पचास
दिन ही खाए

❑

महावीर ने
साढ़े बारह वर्षों
की साधना की

❑

जीवन जीया
स्वयं साधना का ही
महावीर ने

❑

महावीर ने
दास प्रथा की जड़ें
भी हिला दी

❑

महावीर की
साधना का जीवन
दर्शन बना

❑

पहले से था
भोजन का संयम
महावीर का

❑

महावीर का
मन पूरी तरह
अनुशासित

❑

महावीर ने
प्रत्येक आत्मा को भी
स्वतंत्र कहा

❑

महावीर का
वाणी–संयम बेजोड़
माना जाता है

❑

सीखा ही नहीं
विचलित होना भी
कभी लक्ष्य से

❑

तीर्थंकर का
एक्का मनुस्सजाई
उद्घोष भी रहा

❑

सिद्धांत भी हो
महान विभूति का
विश्वजनीन

❑

ज्ञानवादी थे
मानते थे अत्राण
शुष्क ज्ञान को

❑

कैवल्य प्राप्ति
के बाद महावीर
बोलने लगे

❑

महावीर में
ज्ञान और क्रिया का
समन्वय है

❑

कहते थे वे
ज्ञान पुरुष पथ–
भ्रष्ट न होते

❑

महावीर ने
जगाया अनेकांत
अपरिग्रह

❑

महावीर थे
सांस्कृतिक क्रांति के
सूत्रधार भी

❑

महावीर ने
कहा, कोरा ज्ञान भी
सूखा ज्ञान है

❑

मौन रहे वे
अहिंसा को रमने
हेतु आत्मा में

❑

ज्ञानी पुरुष
संभल भी जाता है
गर गिरे तो

□

महावीर की
चेतना पर राग
के स्पंदन थे

□

महावीर ने
जीवनावधियों में की
मौन साधना

□

सभी के लिए
महावीर का मन
खुला हुआ था

□

घातक माना
वैचारिक हिंसा को
महावीर ने

□

रहता दबा
कोरे ज्ञान–भार से
पाप–कर्म में

□

अहिंसा ढूंढ़ा
जो, न्यूटन से बड़ा
अविष्कारक

□

थे पारंगत
आत्मवेध विद्या में
महावीर भी

□

उन्होंने कहा
साधना है समय
ज्ञानी पुरुष

□

महावीर में
क्रांति का दर्शन भी
देता दिखाई

□

कालचक्र का
आदि और न अंत
है होने वाला

□

विचार ऊँचे
भावना हो पवित्र
तभी महान

❑

महावीर ने
जनता की भाषा में
कही हैं बातें

❑

है दृष्टिकोण
अनेकांत दर्शन
महावीर के

❑

जरूरत है
तटस्थ मीमांसा की
महावीर की

❑

उदारता से
महावीर दर्शन
की मीमांसा हो

❑

जो भी आएगा
वह कुछ होकर
ही आ पाएगा

❑

जोर दिया है
आत्म निरीक्षण पे
महावीर ने

❑

प्राणी के नाते
समस्त जीवन है
एक समान

❑

निःस्वार्थ होना
जीवन का चरम
लक्ष्य मानिए

❑

आगे बढ़ाता
चरम लक्ष्य–ओर
निःस्वार्थ कर्म

❑

जो स्वार्थी होता
वह अनैतिक है
यही सच है

❑

पवित्र होता
अपने विचारों से
ही कोई व्यक्ति

❑

उदारता ही
बनाती है आदत
क्षमाशीलता

❑

नकारात्मक
प्रदर्शन से सदा
बचें आप भी

❑

हमेशा करें
छोटी गलतियों की
अनदेखी ही

❑

अनिवार्य है
सुखी जीवन जीने
के लिए क्षमा

❑

'छोड़ो जाने दो'
अपनाकर स्वयं
बचें घातों से

❑

उनकी बातें
सुनें, जिसने ठेस
पहुंचाई हो

❑

ढूँढ़ने होंगे
अब हमें अपने
शांति–औजार

❑

महावीर थे
बड़े घोर विरोधी
अस्पृश्यता के

❑

ऊँचा नहीं है
जो अपने को उच्च
मानता सदा

❑

जो दूसरे को
प्रतिबिंब मानता
ऊँचा नहीं है

❑

जात्य वह है,
जो गुण संपन्न है
कुलीन वह

❑

महावीर ने
जड़ को पकड़ा व
बींधा लक्ष्य को

❑

महावीर ने
व्यक्ति स्वातंत्र्य की
सूझ भी दी है

❑

स्वर्ग नरक
मनुष्य ही के हाथ
होता हमेशा

❑

महावीर थे
दीर्घ तपस्वी और
साधक भी थे

❑

तत्व मीमांसा
मिलती है उनकी
सुलझी दृष्टि

❑

भरा पड़ा है
योग–पद्धति में भी
सारस्य शांति

❑

कभी न किया
उन्होंने व्यक्ति पूजा
का समर्थन

❑

महावीर ने
जन्म को श्रेष्ठता न
माना कभी भी

❑

प्रवर्तक थे
अनुशासन के वे
हृदयग्राही

❑

महावीर तो
लोक आचार को भी
काफी समझे

❑

झकझोरा है
रुढ़ि परंपरा को
महावीर ने

❑

जन्म लिया था
त्रिशला के गर्भ से
महावीर ने

❑

महावीर ने
ढाई हजार पहले
जन्म लिया था

❑

करना पड़ा
निर्जल उपवास
छह मास की

❑

माता–पिता की
मृत्यु, महावीर थे
अट्ठाईस के

❑

महावीर ने
निग्रंथ मुनि होने
को घर त्यागा

❑

महावीर ने
विचारकों को सही
दिशाएं दी हैं

❑

तीर्थंकर की
चेतना के तल पे
सभी का दुःख

❑

माता–पिता ने
'वर्द्धमान' रखा था
इनका नाम

❑

'वर्द्धमान' का
प्राणी ग्रहण हुआ
कन्या यशोदा

❑

तीस आयु में
दीक्षा ग्रहण की थी
वर्द्धमान ने

❑

तीर्थंकर ने
विचार–जड़ता को
दी नई क्रांति

❑

अग्नि लगा दी
जंगली अमीरों ने
उनके पैरों

❑

भोजन किया
तपस्या के दौरान
चौंतिस बार

❑

दिया विश्व को
संदेश अहिंसा का
महावीर ने

❑

किया प्रारंभ
सर्वज्ञता की सिद्धि
उग्रताप भी

❑

विघ्न भी आए
उनकी तपस्या में
अनेक बार

❑

एक वर्ष में
ढेर स्वर्ण मुद्राएं
दान में दिए

❑

पिता के वंश
से ज्ञात पुत्र नाम
पड़ा उनका

❑

प्रारंभ किया
संचित द्रव्य–दान
दीन–दुखियों

❑

महीनों खड़े
होकर ध्यान मग्न
रहते थे वे

❑

उनकी माता
विशाला नगरी की
वैशालिक थी

❑

विख्यात हुए
मौन रहने से ही
मुनि नाम से

❑

महावीर की
मति सत्य स्वरूप
अतः सन्मति

❑

महातिवीर
महात्रिमान धर्म
की वजह से

❑

कश्यप गौत्र
के कारण उनका
नाम काश्यप

❑

देव आर्य थे
महावीर देवार्य
भी कहलाए

❑

महावीर को
ग्यारह नामों से भी
लोगों ने जाना

❑

महावीर ने
जो पथ दिखलाया
चले उसी पे

❑

सत्य, अहिंसा
हमने नाता जोड़ा
प्रेम–भाव से

❑

सिखलायी थी
'जियो और जीने दो'
महावीर ने

❑

उन्होंने कहा
प्यार से गले लगो
दीन–जनों के

❑

फैलाएँ आज
जागरण के स्वर
शांति के लिए

❑

हम खाते हैं
थोड़े से लाभ हेतु
झूठी कसमें

❑

ग्रहण किया
शिष्यत्व इंद्रभूत–
सा विद्वानों ने

❑

अविचल था
हिमालय की भांति
उनका तप

❑

ठोक दी गईं
उनके कानों में भी
अनेकों कीलें

❑

संत बने थे
बड़े–बड़े राजा भी
उपदेश से

❑

इंद्र देव ने
उन्हें 'महावीर' कहा
धैर्य को देख

❑

उनको दिए
असहनीय कष्ट
सर्प, बिच्छू ने

❑

चातुर्मास की
राजगृह वैशाली
जैसे नगरों

❑

प्रारंभ किया
कल्याणमय धर्म
का उपदेश

❑

प्रयास हुआ
लू, वर्षा, ओलों द्वारा
उन्हें डिगाने

❑

अगाध प्रेम
मगध बिहार की
प्रजा के प्रति

❑

उनके शिष्य
बिम्बसार, चेटक
अदीन–शत्रु

❑

समाज सुखी
आत्मसात किया, जो
नैतिक गुण

❑

सहज गुण
समण–श्रमण भी
उनका नाम

❑

गोलोकवासी
बहत्तर की आयु
पावापुरी में

❑

होता हमेशा
तृष्णा से ही अधिक
सुखों का नाश

❑

विदेह कुल
की थी माता त्रिशला
विदेह नाम

❑

महावीर के
जन्म के साथ धन
बढ़ता गया

❑

अक्रोध को ही
कहा जाता रहा है
तप की शोभा

❑

वर्द्धमान को
महावीर बनाया
सेवा भाव ही

❑

उनका नाम
वर्द्धमान कारण
बढ़ता धन

❑

जीवन शुद्धि
सूत्र अणुव्रत का
है कहा जाता

❑

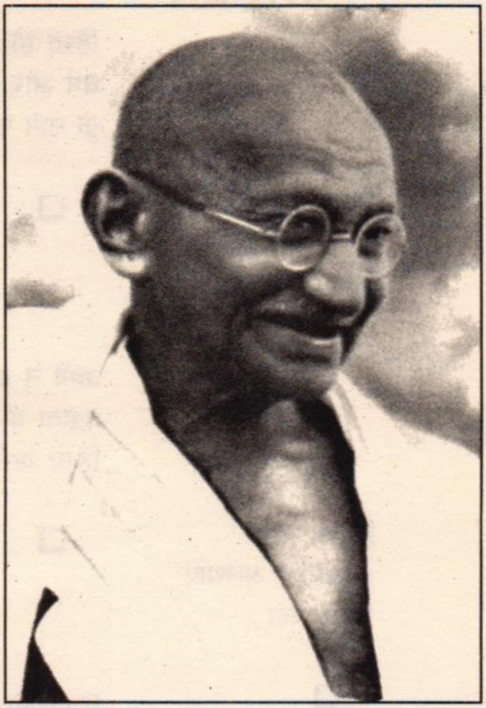

अहिंसा

फैलाएँ आज

जागरण के स्वर

शांति के लिए

अहिंसा

यह सच है
रेखाएं मैंने खींची
पंचशील की

❑

दिन व दिन
हो रहे तिरोहित
जन–स्पंदन

❑

महल बने
कितने कुबेर के
कहाँ रहे हैं ?

❑

मेरे द्वार से
खाली हाथ न जाए
दुआ चाहिए

❑

मिटा दो अहं
इंसान की मुस्कान
फिर लौटा दो

❑

छितरा गईं
हवाओं में आस्थाएं
मैं ढूंढ़ रहा

❑

मिटे राह में
कलुष व कालिमा
दीप जलाओ

❑

हिंसा हो रही
धर्म और कुप्रथा
के नाम पर

❑

कभी न करो
कहता धर्मशास्त्र
हिंसा कभी भी

❑

हिंसा की जड़
मनुष्य की लालसा
भौतिक–सुख

❑

नहीं करूँगा
क्रूर व्यवहार भी
प्राणी के प्रति

❑

अहिंसा यात्रा
अपने जीवन की
है अंतर्यात्रा

❑

सत्य पा गए
जिनके पांव जमीं
पे टिके रहे

❑

साकार करें
आओ सब मिलके
बापू का स्वप्न

❑

अहिंसा वास्ते
गहन प्रशिक्षण
आवश्यक है

❑

जिसका राग
सुन तम हटता
राग सुनाओ

❑

भटक रही
आज है मनुजता
कौन बचाए

❑

हिंसा होती है
पीड़ा भी पहुँचाना
किसी प्राणी को

❑

बिरवे बोए
मैंने अनगिनत
मानवता के

❑

मिलती सदा
हिंसा को उत्तेजना
विषमता से

❑

क्या खोज रहा
निधियां अनमोल
कुछ तो बोल

❑

पावन नीर
जियो और जीने दो
फिर से ला दो

❑

सहनशील
सब सहता गया
यह भारत

❑

बेहतर है
राक्षसी–प्रवृत्ति से
हम नादान

❑

गुनगुना दे
अनजाने ही सही
वेदना–स्वर

❑

न ले जाएंगे
न लेकर आए थे
हाय हाय क्यों ?

❑

बेहतर है
जंग टलती रहे
शांति के लिए

❑

जोड़ सकें तो
चलो, दिलों को जोड़ें
घायल दिल

❑

दिखाएं दीप
अंधकार में राह
चलते–चलो

❑

जग आएगा
आज नहीं तो कल
आज का सच

❑

छूना चाहते
हमें पांव जिनके
पांव नहीं हैं

❑

प्यार के लिए
शमां जलती रहे
बेहतर है

❑

ईमान जब
अमीरों ने खरीदा
रही बची क्या ?

❑

सही इंसान
बनेंगे, घृणा–द्वेष
को त्याग कर

❑

दिल की पीर
अविरल बनके
नीर बहाएं

❑

कर जाएंगे
देश के लिए कुछ
संतोष होगा

❑

सुदृढ़ बनाते
हमारे संबंधों को
सारे रिश्ते ही

❑

शांति आएगी
हिंसक भावनाएं
जब भी त्यागो

❑

दीपक ने दी
चमकीली रोशनी
पी के जहर

❑

जहाँ जीवन
आजीविका की खोज
वहीं हिंसा है

❑

घर से ही हो
अहिंसा का प्रारंभ
लें संकल्प भी

❑

अहंकार का
दूसरा रूप होता
स्वाभिमान है

❑

रहता व्यक्ति
अधिकांश क्षणों में
हिंसा से दूर

❑

बूझने लगे
जब, मेरे दीपक
स्नेह दे देना

❑

आज अंधेरी
रात है, माना, किंतु
कल सबेरा

❑

उर्वरा रही
भू हमारी त्याग व
बलिदान की

❑

अहिंसा–यात्रा
जन की चेतना का
एक प्रयास

❑

जरूरत है
देश को इंसानों की
बौनों की नहीं

❑

सलामत है
आंखें उजड़ी तो क्या
सपना सही

❑

बड़ा कठिन
वस्तुतः जीवन में
मौन रहना

❑

चल पड़े हैं
पैर टेढ़ी राह पे
हाथ दे देना

❑

जल रही है
व्यक्ति के हृदय में
आग द्वेष की

❑

कोई आदमी
हर क्षण हिंसा में
प्रवृत्त नहीं

❑

खुशी बढ़ती
बांटने से लेकिन
घटता दुःख

❑

अहिंसा सदा
आत्म चेतना की ही
स्वीकृति होती

❑

जुड़ी हुई है
अहिंसा वास्तव में
मनोभावों से

❑

पैदा करती
हिंसक प्रवृति को
भूख–अशांति

❑

निखरने दो
भाव बस मानव
सब एक हैं

❑

लेता जा रहा
अहं का वट वृक्ष
अपनी छाँव

❑

न जाने कहाँ
गए इस धरा के
अनुराग भी

❑

सांस तोड़ता
सौहार्द व प्रेम भी
गलियारों में

❑

दूर रहा मैं
अक्सर तुम्हारे संग
रहकर भी

❑

पग की धूल
पर्वत टकराए
तो पथ भूल

❑

छोटी कलियाँ
बड़े फूल के लिए
मत तोड़िए

❑

मातृभूमि की
उपासना करना
कर्तव्य मेरा

❑

चुनौतियां हैं
समाज के समक्ष
विचार की भी

❑

उर्वरा करो
पुनः धरा को प्रेम
के बीजों से ही

❑

रग–रग में
नफरत जिनके
उन्हें मनाएं

❑

नष्ट होती है
झूठ बोलने से ही
किसी की निष्ठा

❑

करें न आप
अहिंसा की कल्पना
शांति के बिना

❑

क्या कोई अभी
नहीं बचा पाएगा
छोटी कलियाँ ?

❑

राष्ट्र पे दृष्टि
सांप्रदायिक दृष्टि
से न उचित

❑

पुकार रही
सारी मानवता को
बच्चों की चीखें

❑

फैली जा रही
घृणा की जड़ें
गांव–शहर

❑

लेकर खड़ा
तलवार आदमी
हर डगर

❑

परखे कभी
नहीं मरते जैसे
पीपल–बीज

❑

हिंसा का नाच
यहां मंजर नहीं
धर्म के नाम

❑

कर्म करता
जो पवित्र मन से
वही धार्मिक

❑

रिश्तों को कहाँ
गइराई से आज
समझा जाता

❑

छवि बनाना
किसी कलाकार के
बस में नहीं

❑

हैं उतरते
प्रेम पाने के लिए
प्रेम में हम

❑

सत्य–अहिंसा
आज के संदर्भ में
सफल सिद्ध

❑

एक हाथ से
ताली नहीं बजेगी
शांति के लिए

❑

लीन होता है
अपनी साधना में
साधक सदा

❑

पूरी दुनिया
नफरत की आंधी
से है तबाह

❑

संकल्प नहीं
विश्व मानस में भी
शांति के लिए

❑

यह सच है
हमारी साधुगोई
मंहगी पड़ी

❑

साधक नहीं
समय बलवान
होता है सदा

❑

स्वच्छ जीवन
राष्ट्र को भी उन्नत
बनाता सदा

❑

कालक्रम में
होती है फलवती
शुद्ध साधना

❑

मौन हों हम
अगर सायुज्यता
चाहते आज

❑

उतरे आप
धरातल पे आप
चाहते शांति

❑

तलाशते हैं
कुर्बानी की बकरें
हार के बाद

❑

खड़ा करता
खड़ा होने वाला ही
कभी किसी को

❑

व्यक्ति की शांति
से समाज में शांति
आती हमेशा

❑

अहिंसा सार
सभी धर्मों का आज
इसे जानिए

❑

बन सकता
नहीं महान कोई
अहिंसा बिना

❑

सबसे बड़ी
अहिंसा जीवन की
है उपलब्धि

❑

सबसे ज्ञानी
वही होता किसी की
हिंसा न करे

❑

अहिंसा नाम
प्राकृतिक साधनों
की संरक्षा का

❑

स्वयं समझें
चेष्टा करें अन्य को
समझने की

❑

न करें हत्या
और न कराएं ही
स्वाद के लिए

❑

बना महान
अहिंसा का आश्रम
लेकर वह

❑

अहिंसा से ही
विश्वासों का सृजन
भी होता सदा

❑

किसी प्राणी को
दुःख न देना, अर्थ
अहिंसा का ही

❑

अहिंसा एक
व्यावहारिक शब्द
है कहा जाता

❑

तीन पहलू
अहिंसा के, भौतिक
विचार, वाणी

❑

दूसरा बड़ा
रोग है संक्रामक
आज संग्रह

❑

संग्रह वृत्ति
आर्थिक विषमता
की उत्प्रेरिका

❑

अहिंसा देती
है मनुष्य की तृप्ति
और विस्तार

❑

अहिंसा आज
मानवीय जीवन
की है कुंजी भी

❑

कहा गया है
जीवन का विज्ञान
अहिंसा को ही

❑

अज्ञानी वह
हिंसा में अनुरक्त
जो ज्ञानी होता

❑

बाध्य करता
संस्कारों का हनन
हमें सोचने

❑

बड़ा खतरा
इच्छाओं का विस्तार
विश्व शांति का

❑

संग्रह वृत्ति
से क्रुरता–संस्कार
जागृत होता

❑

द्योतक नहीं
अहिंसा का संदेश
कायरता का

❑

अपनाते हैं
ज्ञान की राह छोड़
दुर्गुण हम

❑

महापुरुषों
की वाणी में, जग है
झूठा सपना

❑

स्वार्थ के मित्र
यहां पर और न
कोई अपना

❑

धन सम्मान
वातावरण आज का
होता विषाक्त

❑

भटक रहा
शांति की खोज में ही
सारा संसार

संयम से ही
कटेगी समस्याएं
हमारी सारी

हर संकल्प
सकाम साधना का
उद्घोष होता

दुःख की बेला
याद करें, सुख में
मुंह को मोड़ा

काफी साम्य है
जीवन और नदी
के प्रवाह में

बड़ा घातक
आर्थिक प्रलोभन
बुराईयों का

जागृत करें
अहिंसा के बीजों को
प्रसुप्त हिंसा

जीवन होता
अस्तित्वहीन मृत्यु
को पाकर ही

असमानता
भी अनेक हिंसा को
देती है जन्म

असंयम ही
बढ़ती समस्या का
मुख्य कारण

वही चेतना
कारगर होती, जो
समाधान दे

काम करती
बुराई की जड़ में
धन–प्रवृत्ति

❑

उचित नहीं
धन उपासना भी
धन–वैभव

❑

भूले हैं लोग
जिंदगी की अदा व
अपनी दोस्ती

❑

जो समझता
हृदय कर लेता
कर्मवाद को

❑

उभारती है
प्रदर्शन–प्रवृत्ति
यही लालसा

❑

बड़ा पतन
स्वयं के नजर से
गिर जाना भी

❑

समाज आज
धन के आधार पे
मूल्य आंकता

❑

बंद करें भी
सम्मान ज्यादा देना
धनवालों को

❑

प्रयोग किया
अहिंसक जीवन
शैली बापू ने

❑

पास जिसके
ऐशो आराम–चीज
सम्मान पाए

❑

पारस्परिक
प्रगाढ़ता बढ़ाता
विचार साम्य

❑

महात्मा गांधी
सत्य व अहिंसा के
पोषक ही थे

❑

राष्ट्रपिता ने
कानून–कलम से
काम किया था

❑

अंधा बनाया
अपने स्वार्थ ने ही
विचारों को भी

❑

अच्छे कर्म का
कर्मवाद का सूत्र
अच्छा ही फल

❑

है उपयोगी
वही दीप मिटाता
जो अंधकार

❑

वस्तुएं कम
सम्मान समाज में
है होता कम

❑

चौंकते नहीं
घटित अघटित
देखकर वे

❑

जरूरी आज
स्वयं के संरक्षण
हेतु अहिंसा

❑

तन भले ही
विभाजित, मन न
हो विभाजित

❑

जगाएं हम
अपने हृदय में
सेवा भावना

❑

राष्ट्र चेतना
जनता में जगाई
सत्याग्रह से

❑

सत्य का प्राण
अहिंसा, व्यक्ति पशु
उसके बिना

□

परिग्रह ही
कारण है असली
विषमता का

□

मत फेंको तू
पत्थर, रहते हो
शीशे के घर

□

बदल गई
मूल धाराएं आज
इस देश की

□

न जुल्म करो
और न जुल्म सहो
यही हो धर्म

□

प्रबुद्धजन
भी खामोशी अपनी
जल्द ही तोड़ें

□

मेरे घर से
संस्कृति–हवा बहे
बापू ने कहा

□

अहिंसा हेतु
जरूरत है आज
संयम की भी

□

विचार–क्रांति
समय का तकाजा
इस देश में

□

हर तस्वीर
का दूसरा पहलू
भी होता सदा

□

धर्म हो गया
है आज संकुचित
संप्रदाय से

□

बुझानी होगी
नफरत की आग
हर हाल में

❑

नहीं बांटिए
टुकड़ों में समाज
आवाज यही

❑

वह दान, जो
निःस्वार्थ दिया जाए
सर्वश्रेष्ठ है

❑

लहू का रंग
सिर्फ लाल ही होता
समझें हम

❑

तलाशता हूं
स्वर्णिम भविष्य की
राह में सदा

❑

खून की धार
से करुणा चित्कार
बापू की आत्मा

❑

हिंसा का जन्म
असमानता और
विषमता से

❑

बनना होगा
हमें स्वयं स्वर भी
इस हाल का

❑

लहू के प्यास
इंसानी मुहब्बत
को ही बुझा दी

❑

करें न आप
अनावश्यक हिंसा
किसी प्राणी की

❑

हैवानियत
की आग में झुलसा
गांधी का धाम

❑

हिंसा की आग
गुजरात की भूमि में
धधक उठी

❑

देश के लोग
हाथ नहीं मिलाते
कभी दिल से

❑

मिटा दीजिए
नफरत दिल से
हर हाल में

❑

इतिहास का
धनी भारत देश
क्या हुआ इसे ?

❑

नए सिरे से
बोध कराना होगा
वर्तमान को

❑

बनाता सदा
बेहतर समाज
अच्छा संस्कार

❑

इंसानियत
गुजरात की हिंसा
में खत्म हुआ

❑

नहीं निभाया
अपने दायित्व को
राजधर्म ने

❑

एक हम हैं
जो दुश्मन को सदा
गले लगाते

❑

बड़ा कठिन
समझाना, हिंसा में
लिप्त लोगों को

❑

व्यवधान तो
कुछ न कुछ आते
ही निर्माण में

❑

हमें हताशा
से उबरना होगा
हर हाल में

❑

करने लगे
धर्म को अलविदा
दंगा पीड़ित

❑

गांधी की भूमि
हिंसा–प्रतिहिंसा से
लहूलुहान

❑

बेगुनाहों का
कत्ल किस धर्म का
सिद्धांत होगा

❑

मिटाएं आप
घृणा और जलाएं
प्यार के दिये

❑

हो न सकते
देश के वफादार
दंगायी कभी

❑

सजग बने
अपने प्रति होने
वाली हिंसा से

❑

अहिंसा होती
जीवन की समस्या
का समाधान

❑

जगाना होगा
अहिंसा के प्रति ही
अपने भाव

❑

हिंसा बढ़ती
विषम दृष्टिकोण
से ही हमेशा

❑

अहिंसा हेतु
व्यक्ति का दृष्टिकोण
देखना होगा

❑

जोड़–तोड़ से
अधिक व्यक्तियों का
जीवन जाता

❑

अग्रसर हों
आत्म–संयम–पथ
की ओर सदा

❑

बुरे लोगों से
बड़ी आसानी से मैं
होता किनारे

❑

नाम न लेता
हिंसा का भूत कभी
उतरने का

❑

राष्ट्रपिता को
अहिंसा से साक्षात
चंपारण में

❑

हिंसा का नाच
धर्म के नाम पर
अमानवीय

❑

मनुष्य स्वयं
सुख–दुःख का होता
उत्तरदायी

❑

लोक चेतना
अहिंसा यात्रा द्वारा
जागृत होती

❑

सुरक्षित है
कल की बागडोर
आज के हाथ

❑

हिंसा हो रही
बढ़ती विषमता
के कारण भी

❑

कभी न टेकें
हिंसा के सामने भी
घुटने आप

❑

कभी न सूखे
मानवीय करुणा
का रस पिये

❑

अविश्वास ही
असली कारण है
हिंसाओं का भी

❑

जनता तक
पहुंचाना जरूरी
अहिंसा–स्वर

❑

वाणी–संयम
रखनेवाला व्यक्ति
अहिंसा–स्वर

❑

वाणी–संयम
रखने वाला व्यक्ति
ही बड़ा होता

❑

दिखते आज
पूरक अपने में
स्त्री व पुरुष

❑

जहां हो अहं
हिंसा का प्रादुर्भाव
वहां तय है

❑

समानता ही
सभी के जीवन का
एक लक्ष्य हो

❑

शांति प्रयासों को
आचार्य तुलसी ने
एक दिशा दी

❑

युद्ध व हिंसा
चिंता का विषय है
पूरे विश्व में

❑

भरे संस्कार
शांति व अहिंसा के
नई पीढ़ी में

❑

घातक होता
मनुष्य के लिए ही
कोरा अध्यात्म

❑

कोरा विज्ञान
विनाश की ओर ले
जा सकता है

❑

अध्यात्म बढ़े
ज़ागृत करने को
विश्व चेतना

❑

उतारें आप
पवित्रता के रास्ते
स्वयं जीवन

❑

बन रहा है
वर्तमान समाज
युद्ध का क्षेत्र

❑

गिरते मूल्य
ले जा रहे लोगों को
निराश–पथ

❑

व्यक्ति की आस्था
खण्डित हो रही
व्यवस्था से भी

❑

हिंसा का भाव
आदमी के अंदर
घुले भी वह

❑

हिंसा जुड़ी है
व्यक्ति की आक्रामक
मनोवृत्ति से

❑

दरअसल
हिंसा करता व्यक्ति
खुद की सदा

❑

हिंसा की चिंता
करना हर व्यक्ति
का कर्त्तव्य है

❑

निर्दोष पर
हो रहे अत्याचार
पर मौन क्यों ?

❑

करुणा–दया
सभी धर्मों के अंग
यह न भूलें

❑

घेर लिया है
समाज को बाहों में
कुरीतियों ने

❑

समाज को दें
सही दिशा आप भी
गर सकें तो

❑

रोक न सका
समय को भी कोई
हम ही रूके

❑

की है जिसने
समय की भी कद्र
उसने पाया

❑

सांप्रदायिक
असहिष्णुता सदा
बढ़ती जाती

❑

होता अहित
जिससे दूसरों का
बचे आदमी

❑

दिखला सकें
धर्म का सही रूप
तो दिखलाएं

❑

करें प्रयास
समाज में पाने का
सम्मान आप

❑

बांध न सका
समय को भी कोई
हम ही बंधे

❑

न पहचाना
जिसने समय को
उसने गंवाया

❑

ठहर गया
यात्रा का सिलसिला
काले द्वीप पे

❑

तड़पाएँगी
जाने कब तक भी
ये चोटें हमें

❑

कायम करें
भाई–चारे को कैसे
सोचना होगा

❑

इस माटी की
सुगंध में असली
बाकी नकली

❑

आदमी हूं मैं
क्योंकि प्यार करता
आदमियों से

❑

धर्म के नाम
चारों ओर पाखंड
का बोलबाला

❑

राहें अपनी
जो आप बनाते हैं
शीश चढ़ाऊं

❑

क्रंदन होता
सबके जीवन में
मन अपना

❑

जगा देना तू
जग जाए अगर
जो भी तुमसे

❑

एक समान
डाल के हर फूल
राह के शूल

❑

आती बहार
तभी जब भीतर
बदलाव हो

❑

बढ़ा दिया है
मनुष्य की व्यथा ने
मेरे दर्द को

❑

डूबेगी पृथ्वी
यदि मानवता का
अंत हुआ तो

❑

मॉग के लिए
दमन–बंदूक से
निकली हिंसा

❑

शांति–चेतना
आधार स्तंभ होती
विश्व शांति का

❑

हवा से पूछो
ये कौन जलता है
दहलीज पे

❑

हो सकती है
सदैव क्षमा से ही
हिंसा पे जीत

❑

आए न काम
वह जीवन क्या है,
जो संकट में

❑

मानव जाति
आज अहंकार व
स्वार्थ से भरा

❑

मिलता सदा
हिंसा को उत्तेजना
विषमता से

❑

अहिंसा–बिना
शांति की कल्पना
नहीं संभव

❑

गुनगुना दे
अनजाने ही सही
वेदना–स्वर

❑

न ले जाएंगे
न लेकर आए थे
हाय हाय क्यों ?

❑

फैलाएँ आज
जागरण के स्वर
शांति के लिए

❑

जोड़ सकें तो
चलो, दिलों को जोड़ें
घायल दिल

❑

दिखाएं दीप
अंधकार में राह
चलते–चलो

❑

जग आएगा
आज नहीं तो कल
आज का सच

❑

छूना चाहते
हमे पांव जिनके
पांव नहीं हैं

❑

प्यार के लिए
शमां जलती रहे
बेहतर है

❑

ईमान जब
अमीरों ने खरीदा
रही बची क्या ?

❑

सही इंसान
बनेंगे घृणा–द्वेष
को त्याग कर

❑

दिल की पीर
अविरल बनके
नीर बहाएं

❑

चल सकता
न तो विश्व न व्यक्ति
मात्र अहिंसा

❑

अहिंसा सदा
व्यक्ति के जीवन की
उपयोगिता

❑

व्यक्ति ही होते
अहिंसा के केंद्र में
बहुत बार

❑

करना होगा
सूक्ष्म प्रयोग सदा
अहिंसा वास्ते

❑

बड़ा घातक
आर्थिक प्रलोभन
बुराईयों का

❑

हिंसा करती
अपना ही हमेशा
अकल्याण भी

❑

असंतोष ने
धकेला मनुष्य को
आसुरी–वृति

❑

भूले हैं लोग
जिंदगी की अदा व
अपनी दोस्ती

❑

बड़ा पतन
स्वयं के नजर से
गिर जाना भी

❑

हिंसा–अहिंसा
दोनों का भी अस्तित्व
समाज में है

❑

अहिंसा एक
सार्वभौम मृत्यु है
शाश्वत सत्य

❑

उभारती है
प्रदर्शन--प्रवृत्ति
यही लालसा

❑

बंद करें भी
सम्मान ज्यादा देना
धन वालों को

❑

नामदेव थे
अहिंसा के महान
चिंतक–संत

❑

अहिंसा--यात्रा
उपदेश ही नहीं
प्रशिक्षण भी

❑

हिंसा करना
रामसुख ने कहा
अर्थशास्त्र है

❑

अपेक्षित है
उपशम–साधना
हिंसा से मुक्त

❑

काम हो रहा
आज अहिंसा पर
खंड–खंड में

❑

कोटि–कोटि भी
दीप जले तमिसा
चीर–चीर के

❑

नहीं जलती
कभी कोई तिल्ली ही
अचेतन में

❑

विदेह अवस्था
चरम उपलब्धि
है अहिंसा की

❑

अस्तित्व वास्ते
अहिंसा अनिवार्य
व्यक्ति के लिए

❑

नहीं चलता
अंतर्यात्रा के बिना
सच का पता

□

नहीं करूँगा
आक्रामक प्रवृति
का समर्थन

□

प्रत्येक प्राणी
अहिंसा के केंद्र में
होना लाजिमी

□

जीना चाहता
हर एक प्राणी भी
अपने ढंग

□

प्रयुक्त होता
औजारों की खोज में
बौद्धिक शक्ति

□

फलदायक
अंतश्चेता, न कि
मंत्र जाप से

□

निरंकुशता
से होती है लड़ाई
न्याय की सदा

□

सच्चा जीवन
अहिंसा का पालन
और संयम

□

सात्विक बल
प्राचीन संस्कृति में
धर्म–प्राचीन

□

अहिंसा मात्र
साधना ही नहीं है
पारलौकिक

□

अनिवार्य है
वस्तु अपरिग्रह
सत्य जीवन

□

भोग विलास
आज की संस्कृति में
तामसी सत्ता

❑

शांति प्रयास
सफल नहीं होता
संकल्प–बिना

❑

लूटा जा रहा
आँखों की इज्जत
इस बचाएँ

❑

करें प्रयास
जाग्रत करने का
शांति–चेतना

❑

अहिंसा बीज
व्यक्ति के मस्तिष्क में
हिंसा की भाँति

❑

अहिंसा यात्रा
रुपांतरण की भी
चेतना–यात्रा

❑

एकार्थक है
शांति और अहिंसा
जानिए आप

❑

ढुलन देगे
कब तक जुल्मों की
मंदिरा आप ?

❑

अपरिग्रह
दिव्य तत्व ज्ञान का
मार्ग है सही

❑

खिचड़ी–बीच
हाथ डालने से तो
जलेगा हाथ

❑

सीमा करेंगे
अपने स्वामित्व का
हम सदैव

❑

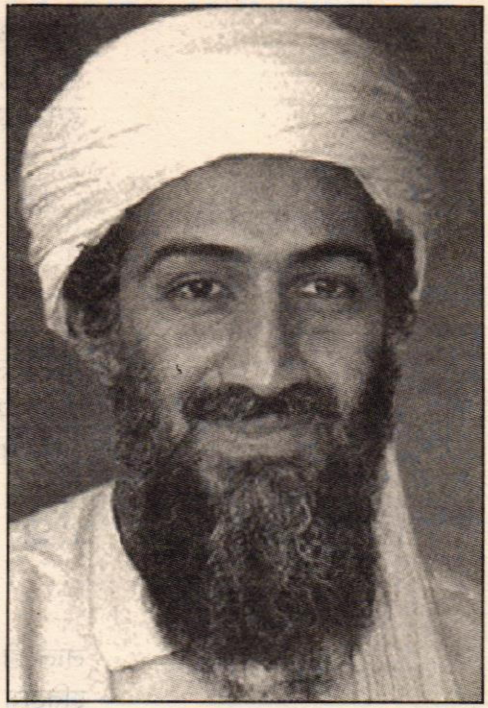

आतंकवाद

आतंकवादी
जबड़े चबाते हैं
जनता के ही

आतंकवाद

रहे उजाड़
अंधा बन स्वार्थ में
अपना घर

❑

रहा उन्माद
जिस खंडहर में
विषाद–बसा

❑

अराजकता
उन्माद निरंकुश
छांव तले है

❑

जल रही है
आग चारो तरफ
सभी खड़े हैं

❑

बह रहा है
जिसने भी हो मारा
लाल ही खून

❑

इंसानियत
कत्ल हो रही, चाहे
जो भी हो मरा

❑

है पाकिस्तान
जरखेज जमीन
आतंकियों का

❑

संवारे आप
संवदेना, जो आज
दम तोड़ती

❑

नहीं जलती
चेतना की आज भी
सुलगाना ही

❑

लाल हो गए
इतिहास के पन्ने
गाँधी आहत

❑

उभर आई हैं
नील गगन पर
कुछ खरोंचें

❑

बिखर जाते
थोड़ी सी कटुता में
सारे रिश्ते ही

❑

जाति, धर्मों के
झगड़े छोड़कर
हैं रिश्ते खोए

❑

पूरे विश्व में
उठ रहा तूफान
शांति खातिर

❑

अजगर ने
आकर शीतलता
मेरी पी डाली

❑

मांगी भीख मैं
सूर्य से, किरण दो
मन चंगा हो

❑

लूटता रहा
धर्मावलंबियों को
धर्म की आड

❑

धर्मों के नाम
आज खुद को हम
छल रहे हैं

❑

सही नहीं है
वह धर्म, जो फूट
डलवाता है

❑

झुक रहे हैं
धन कुबरों आगे
पंडे भी सारे

❑

मारे जा रहे
मंदिर–मस्जिद के
नाम इंसान

❑

चिता की राख
कैद है मुट्ठियों में
चुप हवा की

❑

हिंसा की आंधी
आज पूरे विश्व में
है फैल रही

❑

लूट के अड्डे
मंदिर–मस्जिद में
देवता ऐसे

❑

मौलवी पंडे
भी भ्रष्ट, अभिशाप
बने हैं आज

❑

घर हमारे
आखिर जले, घर
चिराग से ही

❑

बढ़ती हिंसा
संसार में मानव
है परेशान

❑

घूम रहा है
अमेरिका का भूत
जीत का नशा

❑

जब घर से
लूट ले गए डाकू
जागे नींद से

❑

आतंकवाद
से धंधे चौपट व
कोष खोखला

❑

पाकिस्तान ही
आतंकवादियों का
गढ़ पुराना

❑

आतंकवाद
की चपेट में चढ़ा
अमेरिका भी

❑

आतंकवाद
ने खेला दरिंदगी
का खुला खेल

❑

पहुँच चुका
हिंसा की पराकाष्ठा
पर मानव

❑

पहुँच गया
असभ्यता की सीमा
तक आतंक

❑

संभव नहीं
बंदूक की नोक पे
समस्या–हल

❑

आतंकवाद
ने हमारी नींद को भी
हराम किया

❑

जम्मू–कश्मीर
आतंकवादियों का
बना निशाना

❑

असामाजिक
तत्त्वों ने खुलकर
गोटी लाल की

❑

बर्बादी बाद
पैगाम भी आया, तो
किसी काम का

❑

भारी भूल की
पाक को गले लगा
जार्ज बुश ने

❑

काम करता
अत्याचार के पीछे
धन का लोभ

❑

आतंकवाद
से परेशान आज
पूरी दुनिया

❑

आतंकवाद
ने खत्म कर दिया
भाई–चारे को

❑

धार्मिक स्थल
भी आतंकवाद से
बच न पाए

❑

आतंकवाद
में मानव का शत्रु
मानव बना

❑

आतंकवाद
नयी सदी का नया
आयाम हुआ

❑

आतंकवादी
पूरी मानवता पे
हावी है आज

❑

खेली जा रही
धर्म के नाम पर
खून की होली

❑

अमेरिका में
मलते रहे हाथ
खुफिया तंत्र

❑

प्रदूषित है
भारतीय संस्कृति
आतंकियों से

❑

आतंकवाद
विश्व व्यापी चुनौती
बना है अब

❑

हिंसा के दर्द
के बाद अहसास
अमेरिका को

❑

उन्माद से ही
उपजता है आज
आतंकवाद

❑

आतंकवाद
युद्ध पिपासा का ही
है इजहार

❑

क्यों लड़ रहा
इंसान से इंसान
हर देश में

❑

मूक दर्शक
सुरक्षा एजेंसियाँ
अमेरिका की

❑

आतंकवाद
जेहाद की आड़ में
खतरनाक

❑

आतंकवादी
का दंश दो दशक
से झेल रहे

❑

आतंकियों से
स्वयं को न बचाया
अमेरिका भी

❑

आतंकवाद
जबड़े चबाते हैं
जनता के ही

❑

धरे–के–धरे
रहे अमेरिका के
सुरक्षा तंत्र

❑

घातक सदा
लोकतंत्र के लिए
दंगा–फसाद

❑

आसान नहीं
अविश्वास की आग
को बुझा पाना

❑

सभ्य समाज
कलंकित हो रहा
आतंकियों से

❑

आतंकवाद
पर विश्वव्यापी दृष्टि
आज जरूरी

❑

आतंकवाद
धार्मिक कट्टरता
का प्रतिफल

□

साबरमती
का गांधी आश्रम भी
बच न पाया

□

खतरनाक
प्रवृत्ति का बढ़ना
चिंताजनक

□

आतंकवाद
को समाप्त करना
अपरिहार्य

□

गुजरात में
दंगे की घटनाएं
लोमहर्षक

□

पड़ोसी जुटा
हिंसा भड़काने में
हार के बाद

□

करना होगा
आतंकवाद पर
कड़ा प्रहार

□

क्यों भूल गए
हम धार्मिक ग्रंथ
के मूल्यों को ही

□

झील थी शांत
कैसे बहने लगी
खून की नदी

□

पुनः कोशिश
जन की संवेदना
उभारने की

□

शून्य में नहीं
पनपता कभी भी
आतंकवाद

□

खाड़ी युद्ध

ध्वस्त हो गई
इराक की सभ्यता
खाड़ी युद्ध में

खाड़ी युद्ध

कर देता है
मद इसी प्रकार
धराशायी भी

❑

ध्वस्त हो गई
इराक की सभ्यता
खाड़ी युद्ध में

❑

समाज से भी
बुरे व बेईमान
बहिष्कृत हों

❑

ताक पर रखा
प्राचीन सभ्यता को
अमेरिका ने

❑

धज्जियां उड़ीं
संयुक्त राष्ट्र संघ
खाड़ी युद्ध में

❑

घट रहा है
अमीरों पर कर
अमेरिका में

❑

अपनाया है
दोहरे मानदंड
अमेरिका ने

❑

विफल रहा
एक भी साक्ष्य देने
में अमेरिका

❑

अमेरिका ने
दुनिया को ही मूर्ख
बनाया सदा

❑

खाड़ी युद्ध ने
सभी सरकारों को
हिला रखा था

❑

अमेरिका ने
इराकी अतीत को
बर्बाद किया

❑

सारी दुनिया
खड़ी देखती रही
खाड़ी युद्ध को

❑

इराक पर
अमेरिकी हमला
दुनिया दंग

❑

विश्व के सभी
राष्ट्र मूक दर्शक
खाड़ी युद्ध में

❑

मँहगा पड़ा
राष्ट्रपति बुश को
इराक युद्ध

❑

सामने आया
अमेरिकी चेहरा
खाड़ी युद्ध में

❑

बुझती नहीं
इंसानियत की लौ
कभी हिंसा से

❑

हैवानियत
का भूत सवार था
बुश–टोनी पे

❑

फैलती हिंसा
कट्टरपन से ही
अधिकांशतः

❑

अमेरिका ने
संयुक्त राष्ट्र संघ
की उपेक्षा की

❑

जन संहार
को शौर्य समझता
है अमेरिका

❑

इराक युद्धं
करोड़ों विरोधियों
का युद्ध बना

❑

अमेरिका के
आघात व आतंक
पूरे विश्व में

❑

क्या भूल चूके
अफगानिस्तान का
नर संहार ?

❑

धूल में मिली
आदम की धरती
खाड़ी युद्ध से

❑

अंत हो यदि
रावण का तो क्यों न
अमेरिका का ?

❑

अमेरिका की
अपनी मनमानी
इराक पर

❑

आज बना है
अमेरिका दोनों का
खून का प्यासा

❑

अलग ही है
अमेरिका के संयम
की परिभाषा

❑

सच है यह
तानाशाही सत्ता की
समाप्ति हुई

❑

सद्दाम को भी
आंखों पर था बिठाया
अमेरिका ने

❑

होठों से पूर्व
फिसल सकती है
प्याली हाथों से

❑

अमेरिका को
क्या है उसकी सीमा
सीखना होगा

❑

फतह बाद
अमेरिका भी युद्ध
है हार चुका

❑

बन गए हैं
बुश हिटलर के
समान आज

❑

किसी शेर ने
कभी किसी कुत्ते का
आदेश माना

❑

अर्थव्यवस्था
हुई है प्रभावित
खाड़ी युद्ध से

❑

कैसा असर
सहमे सब लोग
पूरा शहर

❑

अमेरिका ने
इराक को क्या मुक्ति
दिला पाई है ?

❑

नहीं चलती
अमेरिका के आगे
आज किसी की

❑

दुर्बल देश
मनमानी–शिकार
महाशक्ति का

❑

इराक देश
प्राचीन सभ्यता का
मालिक रहा

❑

बगदाद के
बेगुनाहों की चीखों
में दर्द भी था

❑

बरगलाई
जिंदगी क्यों दर्द का
ले के सहारा

❑

वापस लौटा
अरमानों की चिता
पारकर मैं

□

अमेरिका ने
इराक को श्मशान
में बदल दी

□

शवों पर ही
अमेरिकी फसल
लहराई है

□

वह कत्ल भी
करते हैं तो कहां
होती है चर्चा

□

जिनके लिए
लड़े थे हम उन्हीं
से मात खाए

□

सबको साफ
सुखियों का चेहरा
दिखाई देता

□

हासिल हुआ
कहां किसी को कभी
मारधाड़ से

□

विरोध हुआ
नाजायज युद्ध का
पहली बार

□

दिखाई पड़े
जलाया हुआ दिया
झांके तो सही

□

मर मिटते
वे आन–बान पर
पैर न पीछे

□

लहू–लुहान
इराक की धरती
दादागिरी से

□

जिंदगी बस
अंधरे के सहारे
बालू रेत सी

❑

अपनी सत्ता
सद्दाम ने भी खो दी
हेकड़ी में ही

❑

पूरा होता है
अमेरिका का स्वार्थ
पाकिस्तान से

❑

नहीं आते हैं
युद्ध के सूत्रधार
मोर्चे पे कभी

❑

सदैव होता
तानाशाह का हश्र
इसी तरह

❑

थपथपाता
अमेरिका सदैव
पाक की पीठ

❑

सद्दाम कभी
अमेरिका की आँखों के
तारे भी रहे

❑

जंग उसे ही
जो कभी न चखा हो
अच्छी लगती

❑

बदलता है
न इतिहास और न
गति व नीति

❑

होती रहेगी
संयुक्त राष्ट्र जैसी
संस्था की हत्या

❑

जिंदा या मुर्दा
अमेरिका के लिए
लादेन दर्द

❑

भारी विरोध
सभी महाद्वीपों में
खाड़ी युद्ध का

❑

समझें हम
दोहरी नीति को भी
अमेरिका की

❑

सद्दाम को भी
पहचान नहीं थी
जनता–नब्ज

❑

जायज होता
युद्ध और प्रेम में
सब कुछ ही

❑

इराकी जन
दो तानाशाहों–बीच
तबाह हुए

❑

बढ़ावा दिया
विस्तारवादी नीति
हिटलर ने

❑

शांति के लिए
अमेरिका के बुश
खतरनाक

❑

असंख्य मन
अवसाद से भरे
खाड़ी युद्ध से

❑

रोक न सकी
विश्व बिरादरी भी
इराक युद्ध

❑

खाड़ी युद्ध में
बुश व ब्लेयर ने
जो चाहा, हुआ

❑

ले जाता सदा
सातवें आसमान
सत्ता का मद

❑

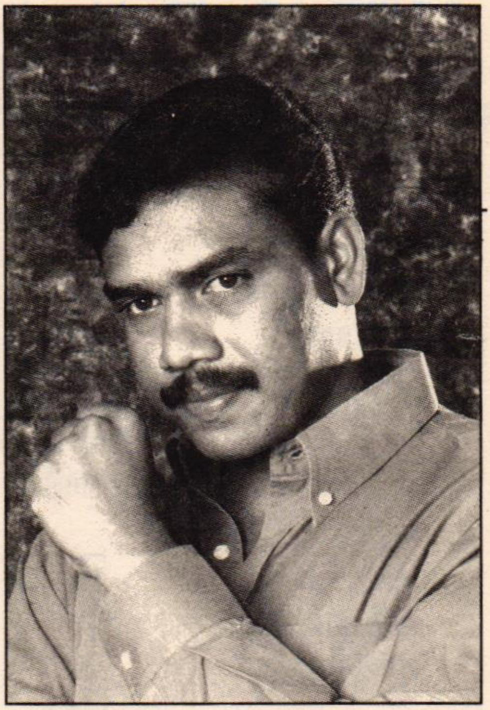

आदमी

आदमी जिंदा
मोक्ष के लिए नहीं
रोटी के लिए

आदमी

हर हमेशा
असहिष्णुता बनाता
अहं व्यक्ति का

❑

एक क्षण भी
समन्वय के बिना
जीवित नहीं

❑

होना हमें है
आत्म विस्मृत और
परप्रिय ही

❑

कहां दीखता
आज के जुलूसों में
आम आदमी

❑

गली तो वही
भीड़ भरी शायद
मैं ही बदला

❑

बात न मेरी
मानी तुमने, राह
गही निराली

❑

तुम क्यों खफ़ा
जब हम खड़े हैं
हाशिए पर

❑

जहां गड़ी है
पैनी दृष्टि तुम्हारी
छल–गठरी

❑

खुद लेना है
माँगने से कुछ भी
नहीं मिलेगा

❑

होनी चाहिए
ताकत हममें भी
कुछ लेने की

❑

प्रयास करें
संबंध को बनाए
रखने का ही

❑

कैसे काटता
आम आदमी दिन
उससे पूछो

❑

रोता मनुष्य
पत्थर के सामने
पत्थर बना

❑

बहाया तूने
क्यों डेढ़ चुल्लू पानी
खुद ईमान

❑

बन गया है
आज व्यक्ति खुद भी
जींस सुंदर

❑

नियंत्रित है
व्यक्ति का जीवन भी
जींसों के द्वारा

❑

वह टूटेगा
हर क्षण चौक पे
रोटी के लिए

❑

कहाँ मिलते
खोजने के बाद भी
सज्जन कहीं

❑

छिछला होता
जीवन व्यक्ति का, जो
ज्यादा बोलता

❑

जीता मनुष्य
सदैव भविष्य के
इंतजार में

❑

जानता हूँ मैं
बुढ़ापा में अपना
है कोई नहीं

❑

पटा लिया है
आदमी की आत्मा को
बेईमानी ने

❑

व्यक्ति को कुछ
भीतर ही भीतर
खाता जा रहा

❑

जो विनम्र है
शांति और खुशी से
जीवन जीता

❑

कहाँ से कहाँ
आया आदमी आज
रोटी के लिए

❑

बने रहना
आदमी का आदमी
बड़ा कठिन

❑

भरोसा नहीं
आज है मनुष्य को
मनुष्य पर

❑

अधिक होती
उसकी कीमत, जो
कम बोलता

❑

द्वंद्वों से भरा
मानव का जीवन
इस युग में

❑

मनुष्य–तन
मनोयोग से रचा
प्रकृति ने भी

❑

सोने नहीं दे
अतीत के सपने
व्यक्ति को आज

❑

चाहे आदमी
किसी भी कौम का हो
चैन चाहता

❑

गुस्सा कैसा भी
आपसी संबंधों को
बिगाड़ता है

❑

रोटी ही सच
परमार्थ–स्वार्थ का
झमेला नहीं

□

न मुसलमां
न हिंदू, मेरे दोस्त
लाश तो लाश

□

है धनवान
वही जो गलत लाभ
उठाता नहीं

□

महंगा न्याय
सस्ती जान, क्या करे
आम आदमी

□

व्यक्ति चाहता
सुख का विस्तार ही
सारी जिंदगी

□

व्यक्ति चाहता
जीना, रोजी–रोटी
बच्चों के लिए

□

वृद्ध आदमी
आदर्श संजोकर
युवा रहता

□

गुस्सा बढ़ाती
नकारात्मक सोच
किसी व्यक्ति की

□

सबसे अच्छा
मनुष्य का जीवन
कर्म चलते

□

आदमी जिंदा
मोक्ष के लिए नहीं
रोटी के लिए

□

कट रही है
सांझ–संग जिंदगी
लड़खड़ाते

□

सुख व दुःख
जीवन में सभी के
आते रहते

❑

नहीं दीखता
दुःख का साथी कोई
सुख के सभी

❑

वही सुखी है
जो मनुष्य स्वयं शुद्ध
द्वेष रहित

❑

होता ताण्डव
आदमी की लाश पे
राजनीति में

❑

जब गिरता
आदमी भूलकर
तो मुस्कुराता

❑

गुस्सा आए
तो ध्यान केंद्रित करें
दूसरे कार्य

❑

तय होती है
आदमी की कीमत
पद से नहीं

❑

निश्छल प्रेम
दांपत्य जीवन में
शांति के लिए

❑

शब्द का तार
सिसकता ही रहा
स्वर अधूरा

❑

नहीं आने दें
नकारात्मक सोच
अपने मन

❑

नहीं देखता
अपने से बाहर
स्वार्थी पुरुष

❑

क्या देखेंगे वे
संसार का सौंदर्य
जो चिंतायुक्त

❑

बुरे लोग भी
महिमामंडित हो
आह्लादित हैं

❑

बाध्य करता
वह हर समय
सूखी में जीने

❑

हर मौसम
करता है अनुभव
मेरे मन का

❑

नहीं किसी को
आमजन की चिंता
इस देश में

❑

दिखाई देता
केवल अपना ही
हर व्यक्ति को

❑

टिकाऊ होता
पति–पत्नी संबंध
प्रेम पे टिके

❑

रहता सदा
दुनिया में अकेला
अहंवादी ही

❑

संभव होता
समाज का हित भी
अच्छे लोगों से

❑

साथ चलते
इंसान और वृक्ष
हर समय

❑

क्या वह कभी
खिलखिला पाएगा
औरों की भांति

❑

प्रेम का होता
व्यक्ति के जीवन में
काफी महत्त्व

❑

समझें आप
एक दूसरे को भी
प्रेम–सहारे

❑

स्वार्थी आदमी
सबको समझता
अपना शत्रु

❑

लक्ष्य होता है
अपने से बाहर
दूर की वस्तु

❑

दिखाई देती
हरियाली न कभी
उसके दिल

❑

रहता साक्षी
हमसफर वृक्ष
हर पल का

❑

युवक हारे
लेकिन यौवन तो
कभी न हारा

❑

तौलता सदा
दूसरों की नजरों
व्यक्ति का मन

❑

अधीर होता
दूसरों की नजरों
व्यक्ति का मन

❑

व्यक्ति बनता
दुनिया का सेवक
स्वयं को भूल

❑

जो अग्नि में है
और है जल में भी
व्यक्ति–भीतर

❑

दिखाई देती
नागिन की तरह
लंबी सड़क

❑

मालूम नहीं
कौन नजर आए
पथ पे हमें

❑

व्यक्ति का अहं
कर्त्तव्य निर्वाह में
बाधक होता

❑

आम आदमी
जूझता संकटों से
सुरक्षा हेतु

❑

मिलता नहीं
परिचित चेहरा
इस गली में

❑

क्यों भूला व्यक्ति
उसका जीवन है
शक्ति का ऋणी

❑

क्या बिगाड़ा था
तूने बदला लिया
नासमझी में

❑

क्या पाया तूने
छीन कर ही मेरे
सुख–सपने

❑

सफल नहीं
संकीर्ण भावना में
रमनेवाला

❑

क्यों करता है
दूसरों के सुख से
ईर्ष्या मनुष्य

❑

हो सकता है
दुःख मेरी कथाएं
लंबी सुखों से

❑

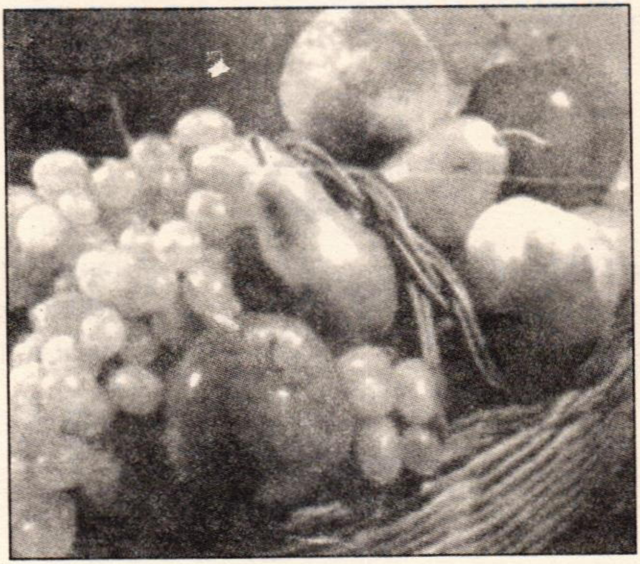

शाकाहार

शाकाहार भी
उत्कृष्ट जीवन की
है एक नींव

शाकाहार

विश्व शांति का
सरल तरीका है
शाकाहार भी

❑

पाए जाते हैं
भोजन–तंतु ज्यादा
शाकाहार में

❑

यह सच है
हानिया नहीं होती
शाकाहार से

❑

शाकाहार से
फैलने वाले रोग
का नाम कहाँ ?

❑

हिंसा नहीं हो
न्याय पद्धति में भी
यही सही है

❑

घट रहे हैं
पाश्चात्य देशों में भी
मांसाहारी ही

❑

प्रचार करें
शाकाहार–प्रसार
गांव–नगर

❑

शाकाहार ही
शांति की स्थापना का
उपाय अब

❑

शाकाहार भी
उत्कृष्ट जीवन की
है एक नींव

❑

कम खाता मैं
पसंद–नापसंद
मेरी अपनी

❑

क्यों अधिकार
बनाने का भोजन
अन्य प्राणी को ?

❑

सर्वश्रेष्ठ है
भोजन पद्धति में
शाकाहार ही

मांसाहार है
आंतों के कैंसर का
मुख्य कारण

जो व्यक्ति पर
हिंसा नहीं करते
उसे हिंसा क्यों ?

कम हो जाती
कैंसर संभावना
शाकाहार से

हार्ट अटैक
नहीं के बराबर
शाकाहार से

ठोस कदम
भोजन की पद्धति
में आंदोलन

कम होता है
शाकाहारी व्यक्ति को
आंत–कैंसर

सस्ता पड़ता
आर्थिक दृष्टि से भी
शाकाहार ही

बड़ी तेजी से
आहार पद्धति में
परिवर्तन

पौष्टिकता है
आम व्यक्ति के लिए
महत्त्वपूर्ण

उच्च कोटि के
अधिकांश खिलाड़ी
शाकाहारी हैं

गाँव

गाँव आज भी
जिंदा, हाँ जिंदा दिली
मुरझा गई

गाँव

पीपल–पेड़
बरगद की छाँव
उदास गाँव

❑

गाँव–शहर
जब भी जले, मरे
बेकसूर ही

❑

हवा के साथ
चल देती आसमां
धरा की धूल

❑

रिश्ते–नाते व
रोटी–बेटी के रूप
कहाँ गाँव में ?

❑

हँसता था मैं
जिनके बल पर
वो हँसी कहाँ ?

❑

सूना आँगन
लौट न सकता गाँव
डूबी न आस

❑

गाँव–दालान
आज हैं सिरहानें
बंदूकें पड़ीं

❑

गाँव प्यारा सा
अभी भी याद मुझे
खेत–सरसों

❑

जाने क्यों कोई
गीत नहीं बनता
दर्द के मारे

❑

सूनी आँखों में
सवाल ही सवाल
नजर आते

❑

वह चेहरा
अनाहत आश्वस्त
अभी भी वही

❑

अब गाँव में
लौटें, छोड़ शहर की
चकाचौंध को

❑

गाँव आज भी
जिंदा, जिंदादिली तो
मुरझा गई

❑

गोटें बिछतीं
गंदी राजनीति की
आज गाँव में

❑

गाँव वही है
पर इसकी मिट्टी
में गंध नहीं

❑

पी गया गाँव
सब खराबियां ही
शहर की भी

❑

आज गाँव में
दूध के स्थान पर
शराब छायी

❑

नष्ट हो गई
एकता–सहिष्णुता
आज गाँव में

❑

कंधे पर से
बाला की चुनरिया
उड़ी गाँव में

❑

मर रही है
आज गाँव की मस्ती
एकता बिना

❑

पोखरी सूनी
पनघट वीरान
गाँव का आज

❑

गाँव वही है
सद्भाव व रिश्ते
न जाने कहाँ ?

❑

स्त्री

कहीं न कहीं
छाया है एक स्त्री की
हर व्यक्ति में

स्त्री

नारी कहती
न खुद खुदा बनो
न मुझे देवी

❑

बिडम्बना है
माँगती स्त्री मर्द से
अपना हक

❑

हर चौराहे
विज्ञापन में आज
नारी बिकती

❑

स्त्रियां निकलीं
वजूद ढूँढ़ने को
चौखट पार

❑

स्त्री नहीं चुकी
भूखे मुँह को देने
में स्वयं छाती

❑

होती खड़ी हैं
किसी की परेशानी
में औरतें ही

❑

दहलीज के
पार स्त्री, चोटे लगीं
पुरुषत्व को

❑

नारी जीवन
उसकी फलसफा
समझना है

❑

कदम रखे
स्त्री बाहर, पुरुष
नहीं चाहते

❑

जागरूक है
अधिकारों के प्रति
महिला आज

❑

कहीं न कहीं
छाया है एक स्त्री की
हर व्यक्ति में

❑

रचना हूँ मैं
हूँ सृष्टि की रचना
फिर भी दु:खी

❑

विधवा–पीड़ा
सुलगती आग सी
मन ही मन

❑

होता बेचैन
बादलों के आते ही
प्रेयसी–मन

❑

किसी के कानों
पहुँचती है कहाँ
आह नारी की

❑

नहीं चाहती
नारी, सिर्फ भोग की
वह वस्तु हो

❑

असलियत
स्त्री की सामने होगी
झांकों तो मन

❑

राह बनाती
सर्जनात्मक नारी
हिंसा के बीच

❑

किसे सुनाएँ
विधवाएँ अपनी
व्यथा कथाएँ

❑

फूल चढ़ाऊँ
पूजा का जिस पर
पाषाण कहाँ ?

❑

दहेज और
उत्पीड़न से नारी
आज तबाह

❑

औरतें ही हैं
जीवन का उत्स भी
पुरुष मानें

❑

जनतंत्र

सत्ता किसी की
विरासत नहीं है
जनतंत्र में

जनतंत्र

ठगने लगे
जब रहबर ही
खुदा मालिक

❑

जनतंत्र के
सारे मधुर स्वप्न
बिखर गए

❑

समझें आप
अपनी जिम्मेदारी
राष्ट्र हित में

❑

है सर्वोपरि
जनता की सोच ही
जनतंत्र में

❑

अपना राष्ट्र
पताका भी अपनी
पर न भाषा

❑

बोलें तो क्या
गुजर नहीं रहा
पानी सिर से ?

❑

काफी गिरी है
राजनीति की साख
सत्ता के लिए

❑

चेतना की ही
जलाएँ सब ओर
मसाल हम

❑

अदालत से
भले ही छूटे, पर
जन से कहाँ ?

❑

सिसक रहा
कोर्ट की कोठरी में
न्याय बेचारा

❑

हम आजाद
नहीं किसी के हम
होंगे अधीन

❑

तय हो गया
जनतंत्र गिरना
गाँधी के बाद

❑

लोकतंत्र में
आज कुर्सियाँ श्रेष्ठ
कहाँ आदमी

❑

लोकतंत्र में
हर प्रणाली–भाँति
कमजोरियाँ

❑

क्या लोकतंत्र
सद्दाम की हार से
बढ़ पाएगा ?

❑

हो रहा आज
जघन्य अपराध
सत्ता की आड़

❑

नेता मानते
स्वार्थ–सिद्धि का लक्ष्य
अपनी जाति

❑

चारों अंगों ने
दफनाया मर्यादा
जनतंत्र के

❑

नेता अमीर
पर हमारा देश
आज गरीब

❑

दुःख बीमारी
प्रजा मारी जा रही
लोकतंत्र में

❑

किसी देश की
पद्धति बाहर से
ठीक क्यों होगी ?

❑

दम तोड़ता
जनतंत्र दिखता
आज देश में

❑

हो सकता है
हिंसा से खतरा भी
लोकतंत्र में

❑

बिक सकता
निर्धन अधिकार
रोटी–टुकड़े

❑

एक विशिष्ट
जीवन पद्धति है
इस राष्ट्र की

❑

बावले आज
राजनीतिक दल
कुर्सी के लिए

❑

विचलित है
जनतंत्र–प्रणाली
सच से आज

❑

नेता ने किया
लोकतंत्र की आस्था
को मटियामेट

❑

रह गयी है
सरकारों की इच्छा
फर्जी होकर

❑

प्रश्रय देते
नई दासता आज
देशी चेहरे

❑

उठता जाता
जनता का विश्वास
जनतंत्र से

❑

खुदा मालिक
खेत का, जब बाड़
ही खाने लगे

❑

बर्दाश्त नहीं
कोई भी अत्याचार
रोटी के लिए

❑

रक्षा की जाती
विचार स्वातंत्र्य की
जनतंत्र में

❑

होती जनता
शक्ति का उद्‌गम
जनतंत्र में

❑

बढ़ रहा है
सरकार व जनता
में अलगाव

❑

देख रहा है
अपनी खुली आँखों से
जन सामान्य

❑

तीव्र हो रहा
जन का आकर्षण
अस्मिता हेतु

❑

जनतंत्र भी
स्वाभाविक रूप से
धनी के पास

❑

लुभाते रहे
प्रतिनिधि सदैव
वायदे से ही

❑

कम न पाए
मनोबल जन का
सवाल आज

❑

लड़ना होगा
एक और युद्ध ही
स्वतंत्रता का

❑

तैयार होते
प्रतिकार के लिए
आज निर्धन

❑

भेड़ों की भाँति
नहीं हो आचरण
जनतंत्र में

❑

बढ़ रही है
घटनाएँ देश में
भ्रष्टाचार की

❑

मुख्य प्रश्न है
देश की एकता का
व्यक्ति का नहीं

❑

कर्त्तव्य छोड़
अधिकारों की ओर
लोग दौड़ते

❑

कहाँ सुनती
सरकार, जनता
की बातों को भी ?

❑

आजादी पायी
देकर बलिदान
पर मिला क्या ?

❑

कौन कहता
देश का जनतंत्र
जीवित नहीं ?

❑

सत्ता किसी की
विरासत नहीं है
जनतंत्र में

❑

जनतंत्र की
क्या है असलियत
जन से पूछो

❑

अधिकार का
होता है जन्म सदा
कर्त्तव्य से ही

❑

सबसे बड़ा
लोकतंत्र हमारा
चला न सका

❑

उसे क्या मिला ?
जनतंत्र पाकर
जन हैरान

❑

देश के नेता
जमाकर वैभव
रखेंगे कहाँ ?

❑

जन अक्सर
पिटते ही रहे हैं
जनतंत्र में

❑

बोली कौन सी
बोलती सरकार
लोकतंत्र में

❑

मजदूरों ने
माँगा हक तो मिली
हवालात ही

❑

मजाक बनीं
ढुलमुल नीतियाँ
जनतंत्र में

❑

जन दे कर
जन प्रतिनिधि को
ऐशो आराम

❑

जनतंत्र में
आज कहाँ दिखता
दूध का धुला

❑

यह ठीक है
जनतंत्र में कमी
फिर भी ठीक

❑

आसान नहीं
बचाए रखना भी
जनतंत्र को

❑

मुझसे पूछो
कैसे मैं काटता हूँ
दिन अपना

❑

होता नहीं है
भ्रष्टाचारी का आज
बाल भी बाँका

❑

जिंदगी जीता
चैन से धन के बल
घोटालेबाज

❑

सवाल खड़ा
नीति–नीयत पर
सरकार की

❑

झाकें गिरेवां
देश के नागरिक
वे कहाँ खड़े

❑

जिसके पास
पैसा आज, कानून
उसकी मुट्ठी

❑

अब क्या बचा
जनतंत्र की इस
सरकार में ?

❑

मंडरा रही
बिचौलियों की छाया
हर क्षेत्र में

❑

कहाँ से लाएं
ईमानदार नेता
व प्रशासक ?

❑

मतदाता तो
गतिशील जीवन
जीना चाहता

❑

कम हो रहा
जनता का विश्वास
जनतंत्र से

❑

जनतंत्र में
सोचने की मनाही
नेता ने कहा

❑

आज हो रही
भारत की गिनती
भ्रष्ट देशों में

❑

जाँच एजेंसी
भ्रमित कर रही
जनता को भी

❑

मजबूर है
सच खड़ा आज भी
कठघरे में

❑

जनतंत्र में
आज सारा समाज
बँट गया है

❑

संरक्षण है
भ्रष्टाचारियों को ही
सरकार से

❑

लूट ले रहा
देश की जनता को
खेबनहार

❑

दिन व दिन
कटुता बढ़ रही
दलों के बीच

❑

भरोसा किया
जनता जिस पर
निकम्मे हुए

❑

जोर से और
न वादे से मिटता
देश का दर्द

❑

हनन होती
लोकतंत्र–मर्यादा
छीटा–कसी से

❑

विदेशी क्यों है
जनप्रतिनिधि की
जीवन शैली ?

❑

राजनेता की
गिरती साख, पर
बचाए कौन ?

❑

पड़ रहा है
कटुता का प्रभाव
समाज पर

❑

बचाऊँ कैसे
डूबती कश्ती को मैं
चिंता यही है

❑

सियासी लोग
कर रहे कुकर्म
कुर्सी के लिए

❑

दंभ छोड़िए
जगाएं जनता को
जो सोई आज

❑

भ्रष्टाचार की
गंगा बहती यहाँ
जनता मौन

❑

राजनीतिक
उल्लू सीधा करते
सभी पार्टियाँ

❑

सत्तासीन हैं
जो लहू पीते रहे
इनसान का

❑

तुम लो कुर्सी
पर जनता को दो
दो रोटियाँ भी

❑

नारे से न तो
कुछ बदला है और
न वादे से ही

❑

जा रही गर्त
देश का जनतंत्र
संभाले कौन ?

❑

सदैव ठगा
जन प्रतिनिधि ने
मतदाता को

❑

सच कहना
आज चाहता कौन
जनतंत्र में

❑

किसी दल को
सिद्धांत व नीतियां
ही निखारती

❑

ओत–प्रोत है
नेता की अंतरात्मा
भ्रष्टाचार से

❑

जकड़कर
बैठ गई जड़ता
जनता को ही

❑

हम लाएँगे
प्रतिनिधियों को भी
सीधे रास्ते पे

❑

मिलते आज
कोरे आश्वासन ही
मतदाता को

❑

कुर्सी के लिए
समझौता करते
आज के नेता

❑

नेता के लिए
कालीन के नीचे है
लोक–कल्याण

❑

सीखाएँ आप
देश प्रेम, लड़ें जो
कुर्सी के लिए

❑

कौन सुनता
आज का पूरा सच
भीड़तंत्र में

❑

मेरी नजरें
बीमारियों पर भी
जनतंत्र की

❑

आँसू

खोल देते हैं
सच्चे मन के आँसू
मन की गांठें

आँसू

खोल देते हैं
सच्चे मन के आँसू
मन की गांठें

❑

वेदना वही
असहाय कदम
उमड़ती जो

❑

घुस जाती है
दहकती निगाहें
मेरे भीतर

❑

आँसू बहाए
सहमी सी जनता
भ्रष्टाचार पे

❑

प्रेम केवल
आँखों और दिल में
बसता सदा

❑

मिलते जहाँ
धरती व आसमां
प्रतीक्षा करो

❑

पिघला जाती
मेरी आह की गर्मी
उसको अब

❑

आँसू तो मानो
स्त्री के पास गिरवी
रखे होते हैं

❑

अखियाँ प्यासी
कैसे गाऊँ मैं गीत
तुम्हारे बिना

❑

होती रही है
वक्त की आँख पर
आँख मिचौली

❑

मेरे शव पे
वे रोएँ, आह भरे
जिसके आँसू

❑

गिन सकता
आँसू की बूंदों की जो
निधियाँ मेरी

❑

बहा देता हूँ
आँसूओं में अपने
सारे गम को

❑

तलाशें हम
दूसरों की हँसी में
अपनी हँसी

❑

मुर्दों के आँसू
गहरे दुःख में ही
गिर पाते हैं

❑

दर्द मिटाया
तेरे आँसूओं ने ही
यही क्या कम ?

❑

जब से गए
नमी–नमी सी रहीं
नजरें मेरी

❑

आँखें खुली थीं
पर मन की आँखें
बुझी–बुझी सी

❑

अधूरी छोड़ी
कह रही कहानी
आँखों का पानी

❑

क्यों कहलाती
यादें, यदि मिटाने
से मिट जाती

❑

अपनी आँखें
औरों के सपने से
तुम जोड़ो तो

❑

पोंछ दें आप
दूसरे के आँसू को
अपने हाथ से

❑

कविवर सिद्धेश्वर की यह कृति- 'जागरण के स्वर' अनेक विषयों को समेट कर चलनेवाला एनसाइक्लोपीडिया है। एक बात जरूरी है—कवि ने जिस किसी भी विषय को उठाया है, उसे अपने प्राणों से सींचा है, हृदय का अमृत पिलाकर उसे जवान किया है, अनुभव का हरा-भरा प्रांगण देकर उसे मरजीवा बनाया है।

—डॉ. देवेन्द्र आर्य

कवि परिचय

संक्षिप्त नाम	:	**सिद्धेश्वर**
पूरा नाम	:	**सिद्धेश्वर प्रसाद**
जन्म	:	18 मई, 1941 ई.
जन्म स्थान	:	ग्राम+पत्रालय बसनियावाँ, जिला-नालंदा (बिहार)
शैक्षणिक योग्यता	:	एम. ए., पटना विश्वविद्यालय, पटना
विशेष योग्यता	:	एस. ए. एस., भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
सरकारी सेवा	:	भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग में 36 वर्षों तक सेवा
स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति	:	वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी के पद से सन् 2000 ई. में स्वेच्छा से सेवा निवृत्त
प्रकाशित रचनाएँ	:	गद्य और पद्य की एक दर्जन रचनाएँ प्रकाशित
अन्य रचनाएँ	:	देश व समाज के ज्वलंत मुद्दों पर एक सौ से अधिक रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित तथा आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से प्रसारित
सम्मान	:	देश के विभिन्न सामाजिक एवं साहित्यिक संस्थाओं से अबतक एक दर्जन से अधिक पुरस्कारों से सम्मानित
रुचि	:	समाज, साहित्य सेवा एवं पत्रकारिता
संप्रति	:	संपादक, 'विचार दृष्टि' एवं राष्ट्रीय महासचिव, राष्ट्रीय विचार मंच
संपर्क	:	1. 'दृष्टि', 6, विचार विहार, यू.-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92 दूरभाष : 011-22059410, 22530652 2. 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना—800001, दूरभाष : 0612-2228519

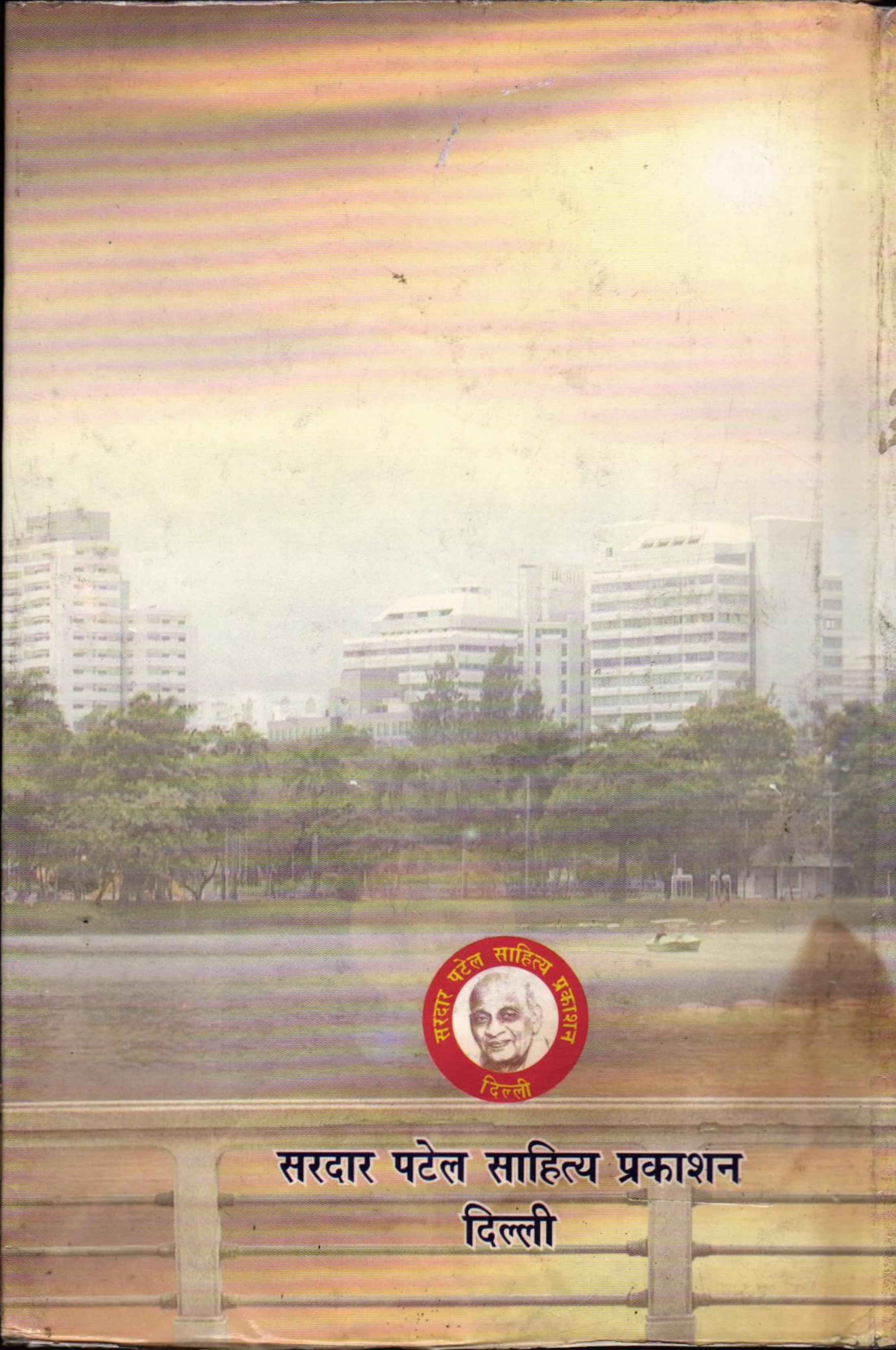
सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन
दिल्ली